राज्य की समस्त आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं एवं पालकों का क्षमता विकास कर उनके माध्यम से प्रत्येक शिशु के उचित देखभाल एवं लालन-पालन के साथ खेल-खेल में शिक्षा के माध्यम से मस्तिष्क की क्षमता का पूर्ण उपयोग करते हुए पाँचों विकास (संज्ञानात्मक, व्यक्तिगत सामाजिक एवं संवेगात्मक, शारीरिक, भाषायी एवं सृजनात्मक विकास) के अवसर प्रदान कर, आत्मविश्वासी मानव बनाने के नींव रखना।

unicef

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

ECCE

उड़ान

मॉनीटरिंग संदर्शिका

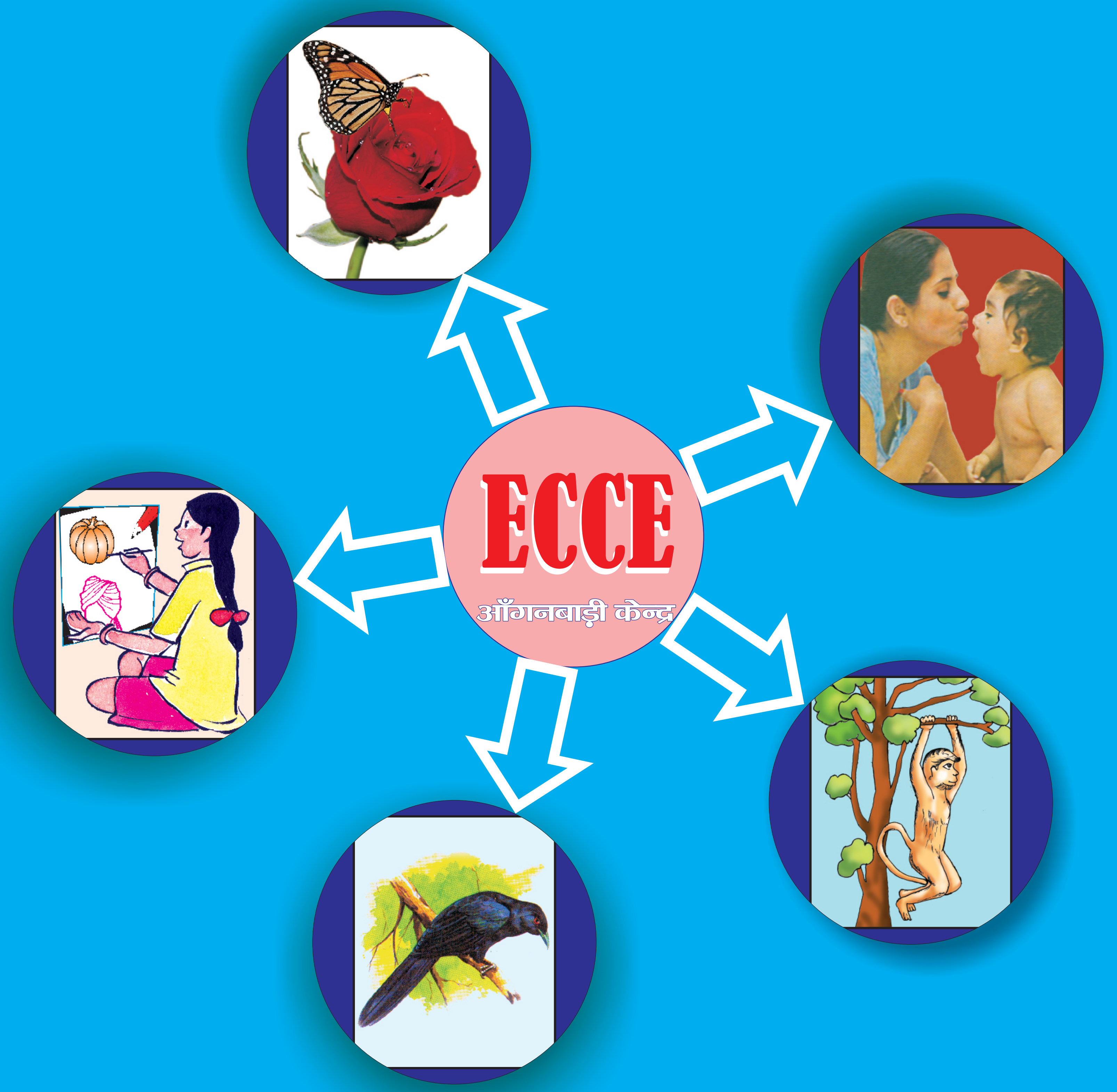

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् शंकर नगर रायपुर

गीत

आओ मिलकर सृजन करें,
जीवन में आंनद भरें।
सपनों के इस आसमान में,
पंखो से उड़ान भरें।
ऊँचे सपने हम सब चुनें,
आसमान को मंजिल चुनें।
विश्वासो के इस डगर पर,
जग से आगे हम चलें।

शिशुओं के इस अंर्तमन में,
नवसृजन की हैं तरंगे।
ऊर्जा के ये गहरे सागर
इनमें ज्ञान-विज्ञान भरें।
असीमित क्षमता है इनमें,
दिल से हम स्वीकार करें।
धरती के इन तारों के संग,
ऊँची एक उड़ान भरें।

योगिता रानी साहू

Front

गीत

आओ हम, सृजन करें, इस जीवन का, आनंद का, नौनिहालों का।

1. ऊँचे सपनों के पथ पर,
विश्वासों की डगर पर,
अरमानों की दुनिया में,
करना है हमें लंबा सफर,
हास मिले या त्रास मिले,
सामने सबके मुस्कायें,
सागर की लहरों से,
ऊँचे उठते जायें,

आओ हम, उड़ान भरें, इन बातों का, कल्पनाओं का, इन सपनों का।
आओ हम, सृजन............

2. शिशु मन जो गढ़ता है,
हर पल उड़ान भरता है,
छोटी सी ऐ जान,
बनोगे अब पहचान,
तुममें है सब ज्ञान,
तुम्हीं भरोगे उड़ान,
तुम्हीं हो विज्ञान,
बनोगे नई पहचान,

आओ हम, सम्मान करें, इस प्यार का, विश्वास का, पहचान का।
आओ हम, सृजन............

3. चाहत की इस मंजिल पर,
आसमां के तल पर,
चुनौतियों को स्वीकारें हम,
क्षमताओं को पहचाने हम,
आसमान को छू लो,
तुम ओ ज़मीं के तारों,
शिशु मन ये समझो,
क्रान्ति हो जाए बढ़ लो,

आओ हम, कल्याण करें, उल्लासों का, मुस्कानों का, इस बचपन का।
आओ हम, सृजन करें, इस जीवन का, आनंद का, नौनिहालों का।

Back

ECCE उड़ान

शिशु शिक्षा एवं देखभाल

(आँगनबाड़ी केन्द्रों की मॉनीटरिंग हेतु संदर्शिका)

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
शंकर नगर रायपुर (छ.ग.)

संरक्षण एवं मार्गदर्शन

सुधीर अग्रवाल (आई.एफ.एस.)
विशेष सचिव, स्कूल शिक्षा एवं छत्तीसगढ़ शासन
संचालक एस.सी.ई.आर.टी. रायपुर

सचिव
महिला एवं बाल विकास विभाग
रायपुर

सहयोग

एन.पी. कौशिक
संयुक्त संचालक
एस.सी.ई.आर.टी. रायपुर

शेषागिरी
शिक्षा अधिकारी
यूनीसेफ रायपुर

समन्वय

अनुपमा नलगुंडवार
प्रकोष्ठ प्रभारी/समन्वयक
एस.सी.ई.आर.टी. रायपुर

सुनील मिश्रा
राज्य स्त्रोत व्यक्ति
एस.सी.ई.आर.टी. रायपुर

लेखन एवं संपादन

श्रीमती मधुदानी, तारकेश्वर देवांगन, बेनीराम साहू, योगिता रानी साहू, चमन लाल साहू , शिवलाल पाण्डे, सुमीत गुप्ता, शीतल वर्मा, दिव्येश वानी, सुधांशु धर दीवान, देवेन्द्र तिवारी, बृजभूषण सोनी, भरत लाल वर्मा, सरिता सिंह(पर्यवेक्षक आई.सी.डी.एस.),लता टिक्कस(पर्यवेक्षक आई.सी.डी.एस.), गीता पैकरा(आं.बा. कार्यकर्ता), नीतू सोनी(आं. बा. कार्यकर्ता), अनुपमा नलगुंडवार, सुनील मिश्रा

डिजाईनिंग, लेआउट व टंकण
राजकुमार चन्द्राकर

प्राक्कथन

विगत वर्षों में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा शिशुओं, बच्चों के गुणात्मक विकास तथा शिक्षकों एवं प्रशिक्षकों के क्षमता विकास हेतु अनेक कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। एम.जी.एम.एल.(बहुकक्षा एवं बहु स्तरीय शिक्षण), बहुभाषा शिक्षण अतिप्रभावकारी लोगों की सात आदतें, जीवन विद्या, छत्तीसगढ़ की संस्कृति पर आधारित पुस्तिकाओं का विकास, सामुदायिक सहभागिता, इंग्लिश लेंग्वेज लर्निंग क्लब (ELLC), राज्य एवं जिले की पाठ्यचर्या का विकास, ए.एल.एम.(Active Learning Method), आदि प्रमुख है। प्राथमिक शिक्षा को मजबूती प्रदान करने के लिए शिशु शिक्षा एवं देखभाल के अंतर्गत "**उड़ान**" पैकेज का निर्माण किया गया है। **उड़ान** में शिशुओं के लिए मनोरंजक एवं आनंददायी गतिविधियाँ हैं, ये गतिविधियाँ बच्चों को आँगनबाड़ी की ओर आकर्षित तो करती ही हैं, साथ ही शिशुओं के विकास को सुनिश्चित कर शाला पूर्व शिक्षा को आधार प्रदान करती है।

अतः परिषद् द्वारा थीम आधारित सामग्री का निर्माण, वितरण एवं आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण संपन्न कर लिया गया है। आँगनबाड़ी केन्द्रों में सामग्री के उपयोग की प्रक्रिया प्रारंभिक स्थिति में है। वर्तमान में हमारी प्राथमिकता प्रक्रिया में तेजी निरंतरता लाना है इसके लिए सतत् मॉनीटरिंग और फीडबैक की आवश्यकता है।

इस हेतु परिषद् द्वारा मॉनीटरिंग कार्य के लिए यह संदर्शिका निर्मित की गई है। मॉनीटरिंग का उद्देश्य आँगनबाड़ी केन्द्रों में उड़ान कार्यक्रम का व्यवस्थित संचालन है तथा केन्द्रों में आने वाली समस्याओं/कमियों को पहचानना, विश्लेषण करना और उनका त्वरित निदान करना है। मॉनीटरिंग के लिए टूल भी विकसित किए गए है जिसमें चेक लिस्ट, मूल्यांकन पत्रक आदि हैं। मॉनीटरिंग का कार्य सुपरवाईजर्स, सी.ए.सी., बी.आर.जी., बी.ए.सी, बी.आर.सी., बी.ई.ओ. , सी.डी.पी.ओ. सभी करेंगे। उचित मॉनीटरिंग से सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न कर कार्यकर्ताओं को सशक्त किया जा सकता है।

मॉनीटरिंग के लिए एक सूचना तंत्र बनाया गया है। जिसमें सूचनाओं का निरंतर प्रवाह आँगनबाड़ी केन्द्रों से राज्य तक और राज्य से आँगनबाड़ी केन्द्रों तक होता रहेगा। राज्य स्तर पर एजूसेट के माध्यम से सेक्टर और जिलों स्तर पर समीक्षा बैठकें आयोजित की जाएंगी तथा उपलब्धियों एवं कमियों पर चर्चा होगी। कमियों को यथाशीघ्र दूर किया जाएगा।

मॉनीटरिंग, शिशु शिक्षा एवं देखभाल की पूरी प्रक्रिया को मजबूत करने का सशक्त माध्यम है, इससे प्रक्रिया में तेजी आयेगी। मुझे विश्वास है कि यह संदर्शिका निश्चित रूप से मॉनीटरिंग हेतु नई दिशा प्रदान करने में सक्षम होगी।

शिशु शिक्षा एवं देखभाल की समस्त गतिविधियों में सतत सहयोग के लिए महिला एवं बाल विकास विभाग तथा यूनीसेफ के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ। मॉनीटरिंग की योजना एवं संदर्शिका विकास से जुड़े व्यक्तियो की भूमिका एवं सहयोग निरंतर वांछनीय है। इससे शिशु शिक्षा एवं देखभाल कार्यक्रम निश्चित ही अपने उद्देश्य प्राप्ति में सफल होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

आपके सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा।

संचालक

अनुक्रमणिका

			पृष्ठ क्रमांक
अध्याय 1 –			
	ई.सी.सी.ई की अवधारणा	–	1
	थीम	–	2
	थीम वेब	–	3
	आई.सी.डी.एस. विभाग की विभिन्न गतिविधियाँ	–	4
अध्याय 2 –			
	प्रेरक गतिविधियाँ	–	5
	संज्ञानात्मक विकास	–	9
	व्यक्तिगत, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास	–	10
	शारीरिक विकास	–	11
	भाषायी विकास	–	12
	सृजनात्मक विकास	–	15
अध्याय 3 –			
	मॉनीटरिंग की अवधारणा	–	16
	मॉनीटरिंग क्यों ?	–	17
अध्याय 4 –			
	आँगनबाड़ी की मॉनीटरिंग कैसे ?	–	19
	मॉनीटरिंग के तरीके	–	19
	आँगनबाड़ी केन्द्रों के विकास हेतु इकाईयों की भूमिका	–	20
	सहायिका की भूमिका	–	20
	कार्यकर्ता की भूमिका	–	20
	साप्ताहिक कार्य	–	21
	मासिक कार्य	–	21
	पर्यवेक्षक की भूमिका	–	21
	बी.आर.जी. की भूमिका	–	22
	सी.ए.सी. की भूमिका	–	23
	सी.डी.पी.ओं. की भूमिका	–	24
	बी.ई.ओ./बी.आर.सी. की भूमिका	–	24
	डी.ई.ओ./डी.पीसी./डाइट प्राचार्य की भूमिका	–	25
	आई.सी.डी.एस./एस.सी.ई.आर.टी. की भूमिका	–	26
अध्याय 5 –			
	कार्यकर्ता का स्वमूल्यांकन प्रपत्र	–	27
	भौतिक संसाधन की जानकारी	–	29

	प्रक्रिया एवं सेवाएँ	–	31
	बच्चों की कउपलब्धियाँ	–	33
अध्याय 6 –			
	सामान्य चेक लिस्ट	–	35
	अनौपचारिक शिक्षा–आँगनबाड़ी केन्द्र का प्रपत्र	–	37
	संकुल, सेक्टर स्तरीय रिपोर्ट प्रपत्र	–	38
	विकासखंड स्तरीय रिपोर्ट प्रपत्र	–	40
	जिला स्तरीय रिपोर्ट प्रपत्र	–	42
	मूल्यांकन प्रपत्र – संज्ञानात्मक विकास हेतु	–	45
	शारीरिक विकास हेतु	–	46
	भाषायी विकास हेतु	–	47
	सृजनात्क विकास हेतु	–	48
	समीक्षा बैठक	–	50
	कार्यकर्ता का स्वमूल्यांकन	–	51
	आँगनबाड़ी केन्द्रों में समुदाय के साथ गतिविधियाँ	–	53
	उड़ान/थीम यात्रा	–	54
बालगीत –	चहक	–	56

अध्याय 1

ECCE की अवधारणा

बच्चों के जीवन का आधार पाँच साल में बन जाता है। वह उसी आधार के अनुरूप अपना जीवन चलाता है। विभिन्न शोधों से ज्ञात होता है कि गर्भावस्था से तीन वर्ष की आयु तक बच्चों के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत हिस्सा विकसित हो जाता है। मस्तिष्क का उचित उपयोग होने पर ज्ञान तन्तु (न्यूरान्स)विकसित होते हैं और सक्रिय रहते हैं, अन्यथा ज्ञान तन्तु निष्क्रिय होकर टूटते जाते हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे मकान बनाने के पहले नींव बनाई जाती है। नींव मजबूत होगी तो मकान अच्छा होगा अर्थात् शैशवावस्था बच्चों के जीवन के लिए महत्वपूर्ण होती है। बच्चों को अच्छा बनाना है तो उनके प्रारंभिक पाँच वर्षों में सीखने का समुचित अवसर उपलब्ध कराना चाहिए। शिशु शिक्षा संपूर्ण जीवन की नींव होती है।

शिशु शिक्षा एवं देखभाल क्या है ? आइये देखें –

A देखभाल – शिशु के शरीर का सही पोषण करना, शरीर को स्वस्थ रखना, शरीर की वृद्धि पर निरन्तर निगरानी रखना एवं स्वास्थ्य की जाँच करना ही देखभाल है। आँगनबाड़ी कार्यकर्ता का दायित्व है कि शिशु में होने वाले विकास की वैज्ञानिक विधि से देखभाल करें। देखभाल का तात्पर्य पोषण के साथ शिशु के शारीरिक वृद्धि एवं संवेगात्मक विकास से है। देखभाल के अंतर्गत निम्नलिखित क्षेत्र हैं :–

1. पूरक पोषण आहार
2. टीकाकरण
3. स्वास्थ्य जाँच
4. संदर्भ सेवा
5. वृद्धि निगरानी, प्रोत्साहन एवं स्वास्थ्य पोषण

B शिशु शिक्षा – वास्तव में शिशु जब माँ के गर्भ में होता है। तभी से उसके ज्ञान तन्तुओं को सक्रिय रखने हेतु शारीरिक कसरत के साथ–साथ मानसिक कसरत की भी आवश्यकता होती है। अतः हम कह सकते हैं कि शिशुओं की शिक्षा यही से प्रारंभ हो जाती है। (तीन वर्ष की आयु तक) शिशुओं के मस्तिष्क का विकास लगभग 85 प्रतिशत हो जाता है। अतः शिशु शिक्षा, गर्भ से प्रारंभ हो जानी चाहिए, जिससे शिशुओं का बौद्धिक विकास उचित एवं सही दिशा में हो सके। शिक्षा के अभाव में शिशुओं के मस्तिष्क के ज्ञान तन्तु निष्क्रिय हो जाते हैं। जिसमें वे अपनी मानसिक क्षमताओं का पूर्ण प्रदर्शन नहीं कर पाते। अतः आँगनबाड़ी केन्द्रों में शिशु शिक्षा की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए। इसी उद्देश्य से शाला पूर्व शिक्षा को छठवीं सेवा के रूप से जोड़ा गया है। शिशुओं की मूलप्रवृत्ति खेलने की होती है। अतः शिशु शिक्षा के लिए अत्यन्त आकर्षक कार्ड बनाए गए हैं। बच्चे इन कार्डों के

माध्यम से खेल–खेल में सीखेंगे। ये कार्ड उनके मस्तिष्क की क्षमता को विकसित करने में अत्यन्त सहायक हैं। शिशु शिक्षा को शिशु में होने वाले विकास के आधार पर निम्नलिखित पाँच क्षेत्रों मे बाँटा गया है:–

1. संज्ञानात्मक विकास
2. व्यक्तिगत, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास
3. शारीरिक विकास
4. भाषायी विकास
5. सृजनात्मक विकास

थीम – थीम का तात्पर्य विषय से है, परिवेश के विभिन्न विषयों को वैज्ञानिक तरीके से शिशु शिक्षा से जोड़ा गया है। इसके अंतर्गत पाँचों विकास की गतिविधियों के लिए 50 थीम निर्धारित हैं –

1. हमारा परिवार	2. हमारा घर
3. मेरा गाँव	4. आँगनबाड़ी
5. बाजार	6. हमारा शरीर
7. साफ–सफाई	8. दिनचर्या
9. खेल	10. समय
11. जंगली जानवर	12. पालतू जानवर
13. जीव–जंतु	14. कीड़े–मकोड़े
15. पक्षी	16. उपकरण
17. संचार के साधन	18. धातु
19. यातायात के साधन	20. सुरक्षा
21. अस्पताल	22. दैनिक उपयोग की वस्तुएं
23. सर्कस	24. हमारे मददगार
25. शाला	26. बागवानी
27. पेड़–पौधे	28. फूल
29. फल	30. रंग
31. रसोई	32. भोजन
33. सब्जी	34. आग
35. जंगल	36. नदी

37. पहाड़	38. धरती	39. आकाश
40. हवा	41. पानी	42. कपड़े
43. परिवेश	44. ऋतुएं	45. मेला–मड़ई
46. त्यौहार	47. हमारी लोक कलाएं	48. हमारी वेशभूषा
49. खिलौना	50. पर्यावरण संरक्षण	

थीम वेब – थीम वेब का तात्पर्य है विषयों का जाल। 50 थीम्स को उनकी एकरूपता के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। लगभग समान थीम्स को मिलाकर थीम वेब बनाया गया है। इस प्रकार कुल 10 थीम वेब निर्मित किए गए है –

1. हमारा परिवार 2. हमारा घर 3. मेरा गाँव 4. आँगनबाड़ी 5. बाज़ार	6. हमारा शरीर 7. साफ–सफाई 8. दिनचर्या 9. खेल 10. समय
11. जंगली जानवर 12. पालतू जानवर 13. जीव–जंतु 14. कीड़े–मकोड़े 15. पक्षी	16. उपकरण 17. संचार के साधन 18. धातु 19. यातायात के साधन 20. सुरक्षा
21. अस्पताल 22. दैनिक उपयोग की वस्तुएँ 23. सर्कस 24. हमारे मददगार 25. शाला	26. बागवानी 27. पेड़–पौधे 28. फूल 29. फल 30. रंग
31. रसोई 32. भोजन 33. सब्जी 34. आग	35. जंगल 36. नदी 37. पहाड़ 38. धरती 39. आकाश
40. हवा 41. पानी 42. कपड़े 43. परिवेश 44. ऋतुएँ	45. मेला–मड़ई 46. त्यौहार 47. हमारी लोककलाएँ 48. हमारी वेशभूषा 49. खिलौना 50. पर्यावरण संरक्षण

विभाग की विभिन्न गतिविधियाँ

सेवाएँ – 1. पूरक पोषण आहार
2. टीकाकरण
3. स्वास्थ्य जाँच
4. संदर्भ सेवा
5. वृद्धि निगरानी, प्रोत्साहन एवं स्वास्थ्य पोषण
6. शाला पूर्व शिक्षा

1. **पूरक पोषण आहार** – इनके अंतर्गत बच्चों को नाश्ता, चना, मुर्रा, मूंगफली, गुड़, दाल–भाल और टी. एच. आर. के अंतर्गत रेडी टू इट दिया जाता है।

2. **टीकाकरण** – गर्भवती माता एवं बच्चों का संपूर्ण टीकाकरण किया जाता है।
3. **स्वास्थ्य जाँच** – गर्भवती एवं शिशुवती महिलाओं/बच्चों, किशोरी बालिकाओं का स्वास्थ्य जाँच किया जाता है।
4. **संदर्भ सेवा** – इसके अंतर्गत गंभीर कुपोषित बच्चों को संदर्भ सेवा दी जाती है।
5. **वृद्धि निगरानी, प्रोत्साहन एवं स्वास्थ्य पोषण** – जन्म से लेकर 5 वर्ष तक के बच्चों का वजन लेकर उनको सलाह दी जाती है।
6. **शाला पूर्व शिक्षा** – 3 से 6 वर्ष तक के बच्चों को शाला पूर्व अनौपचारिक शिक्षा दी जाती है।

विभिन्न योजनाएँ

1. **दत्तक पुत्री योजना** – पहली से पाँचवी तक के बालिकाओं को 400 रु. शिक्षण सामग्री हेत दत्तक लेने वाले पालकों द्वारा प्रदान किया जाता है।
2. **आयुष्मति योजना** – 18 वर्ष तक की महिलाएँ जो गंभीर रूप से पीडित्रत है उन्हें जिला स्तर पर चिकित्सिकीय सुविधा दी जाती है।
3. **मुख्यामंत्री कन्यादान योजना** – 18 वर्ष से ज्यादा उम्र की और गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले बालिकाओं का विवाह किया जाता है।
4. **बाल संदर्भ योजना** – गंभीर कुपोषित बच्चों को मुफ्त चिकित्सकीय सेवाएँ दी जाती हैं।
5. **छत्तीसगढ़ महिला कोष** – स्व–सहायता समूहों को आर्थिक सहायता दी जाती है।

अध्याय 2

प्रेरक गतिविधियाँ

जन्म से छः माह के शिशु के लिए

शारीरिक विकास	भाषा विकास	व्यक्तिगत व सामाजिक विकास हेतु	बौद्धिक विकास हेतु
• ताली बजायें, झुनझुना दे, झुनझुना अलग–अलग दिशाओं में ले जायें। • कपड़े के खिलौने दें। रंगीन वस्तु या बजने वाला खिलौना दें। • अपनी ऊंगली पकड़ने दें। • होठ या ठोड़ी हिलायें, हँसाएं। • पेट के बल लुढ़काने के लिए बतायें। • मालिश के समय हाथ–पैरों की कसरत करायें।	• गोद में लेकर बात करें, ध्वनि निकालने के लिए उकसाएं। • कपड़े पहनाते समय गीत, लोरी गीत गायें। • काम करते समय भी बात करें। • आसपास की वस्तुओं के नाम बतायें। • शिशुओं के साथ स्वयं बा–बा–बा, न–ना–ना–ना, च–चा–चा आदि दोहरायें।	• स्नेह करें। • गोद में लेकर थप–थपायें। • ध्वनि, ताल के साथ शिशु को हिलायें ,झुलायें। • स्तनपान के दौरान शिशु से बात करें। • पीठ व सिर को सहलायें। • परिवार के अन्य सदस्यों के साथ रहने के अवसर दें। • शिशु को घुमाने ले जायें।	• पालने में रंगीन चीजे लटकायें व खेलने दें। • पालने को सभी कमरों में रखते रहें व आंगन में भी रखें। • शिशुओं को मुलायम खिलौने खेलने पकड़ने दें। • शिशु को आसपास की चीजों के बारे में बतायें।

''आज से 100 साल बाद इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा कि आप कौन सी कार चलाते थे, कैसे मकान में रहते थे, आपका बैंक बैलेंस कितना था, आपके कपड़े कैसे दिखते थे........ लेकिन अगर आप एक बच्चे की जिंदगी में महत्वपूर्ण बन जाते है तो दुनिया शायद बेहतर बन सकती है।''

मार्ग्रेट फ्रिशबैक पावर्स

प्रेरक गतिविधियाँ

छः से बारह माह के शिशु के लिए

शारीरिक विकास	भाषा विकास	व्यक्तिगत व सामाजिक विकास हेतु	बौद्धिक विकास हेतु
• शिशुओं को गोद में बैठायें। • वस्तु उठाने दें। • हाथ में खाने की वस्तुएं भी दें। • शिशु को बिठाकर पानी,रस, दाल का पानी आदि दें। • पेट के बल लिटाकर, दिखाकर, खिसकाते जाएं। • लुढ़कने वाले खिलौने दें। • तालियाँ बजाये, टाटा, बुलाने आदि के लिए इशारा करें। • पैरों पर झुलायें खड़े करके भी झुलायें ,गायें। • सहारे से खड़े करायें। • अपने पैरो पर खड़े होने के लिए प्रेरित करें। • हाथ पकड़कर चलना सिखायें।	• दैनिक क्रियाओं के समय गीत सुनायें। • काम के समय भी उससे बातें करें। • शिशु से दादा, मामा, नाना, बाबा आदि बुलवाये। • घर के सदस्यों के नाम बतायें। • शिशु के हाथ की ऊंगलियाँ गिनें व गिनते–गिनते गुदगुदायें। • पैरों पर लिटायें ,झुलाते हुये गीत गायें।	• शिशु को गोद में लेकर लिपटायें। • खिलाते समय छोटी कहानी सुनायें। • गीत सुनायें व शिशु को हिलायें–डुलायें • घर के आस–पास के लोगों के रिश्ते के नाम बतायें। • घुमाने ले जाए घुमाते समय भी बात करें। • शौच व शु–शु कराते समय आवाज निकाल कर, बताकर, पूछकर ले जाएं।	• अई–ता(लुका–छिपी) का खेल खेलें। • बहुत सारे खिलौने खेलने दें। • कटोरी, चम्मच बजाने दें। • कुत्ता, बिल्ली, चिड़ियाँ की आवाज़ें बतायें। • चंदा मामा, तारे ,सूरज दिखायें।

''सहज वात्सल्य में अमृत दृष्टि का विकास होता है, अभिभावक की आँख में अमृत दृष्टि होनी चाहिए।''
गिजू भाई

प्रेरक गतिविधियाँ

एक से दो वर्ष शिशुओं के लिए

शारीरिक विकास	भाषा विकास	व्यक्तिगत व सामाजिक विकास हेतु	बौद्धिक विकास हेतु
• शिशु को पलंग आदि के सहारे खड़े करें। • हाथ पकड़कर चलने हेतु प्रेरित करें। • स्टूल, कुर्सी, टेबल, पाटा आदि ढकेलने दें। • शिशु को सुंदर व आकर्षक खिलौने दिखाकर कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित करें। • चक्के वाले खिलौने खींचने ,चलाने दें। • सीढ़ियों पर चढ़ने दें या कम ऊँची जगह पर चढ़ने, कूदने दें। • कूदने में शिशु की मदद करें व गिनती बोले ताली बजाकर प्रेरित करें। • खाट, पलंग, कुर्सी, मेज आदि के नीचे से आर–पार निकलने दें। • शीशी, डिब्बी आदि प्लास्टिक के पेंचदार वस्तुएं खोलने दें। • खाली डिब्बे देखने व रखने दें। • खाली डिब्बे, माचिस, ढक्कन, रेत व मिट्टी से खेलने दें। • अपने हाथ से, चम्मच से खाने दें। • दोनों हाथों से दूध, पानी आदि पीने दें।	• शरीर के अंगों के नाम बतायें व पूछें। • छोटे गीत सुनायें व अभिनय करवायें। • जानवरों, पक्षियों के चित्र दिखायें व पूछें। • फल–सब्जियों के नाम बतायें व पूछें। • टी.वी. देखने दें ,शिशु से बातचीत करें व बोलने के लिए प्रेरित करें। • अटकन–बटकन का खेल खिलायें। • नकल करने हेतु कहें।	• घर व आसपास के परिचितों से नमस्ते कराना बतायें। • भगवान को, बड़ों को, झुककर प्रणाम करवायें। • सभी के साथ खेलने दें। • स्वयं खाने–पीने दें। • बगीचे में घुमाने ले जाएं। • बाजार ले जाएं एवं वहाँ की वस्तुएं दिखायें। • छोटे–छोटे काम जैसे कटोरी उठाने आदि को कहें। • पकड़ना, रखना आदि करने के लिए प्रोत्साहित करें। • शौच व शू–शू जाने की आदत डालें। • स्वयं नहाने दें।	• अंगुली पकड़ने व छिपाने का खेल खिलायें। • रेत, फूल, पत्ती,बीज आदि खेलने दें। • शिशु को पानी फेकने, फैलाने दें, पानी में हाथ हिलाने दें। • ताले में चाबी डालने दें। • नल खोलने व बंद करने दें। • गीत सुनाये तथा अलग–अलग अवाज़ें टन–टन, ट्रिन–ट्रिन, पो–पो, छुक–छुक आदि बतायें। • लकड़ी के गुटके, माचिस आदि से खेलने दें। • टोकनी में सभी खिलौने रखने, उठाने, खेलने दें।

प्रेरक गतिविधियाँ

2–3 वर्ष के आयु समूह के लिए

शारीरिक विकास	भाषा विकास	व्यक्तिगत व सामाजिक विकास हेतु	बौद्धिक विकास हेतु
• सीढ़िया चढ़ने उतरने में सहायता करें व चढ़ने उतरने दें। • जमीन पर, टब के पानी पर छपछप करने दें। • फर्श की लाइन पर, क्यारी पर, मेंढ़ पर चलने दें। • गेंद को पैर से ठोकर मारने दें। • कूदने के लिये प्रेरित करें। • दौड़ने दें, दौड़ने–पकड़ने का खेल खेलने दें। • तिपहिये वाली साइकिल, गाड़ी बनाकर चलाने दें। डिब्बों से • संगीत, गीत की धुन पर थिरकने को कहे। • लकड़ी से रेत, मिट्टी पर लकीरे खींचने दें। • गत्ते के छेद में धागा डालने व निकालने दें।	• शिशुओं को नहलाते, कपड़े पहनाते, भोजन कराते समय शरीर के अंगों के नाम पूछें व अंगों के गीत सुनायें। • कहानियाँ सुनायें, छोटे–छोटे गीत सुनायें व दोहराने को कहें। • चुटकी बजाने का खेल खिलायें। • अपने पैरो पर झुलाये व गीत गायें जैसे–अटकन–बटकन। • शिशु की पसंद पूछकर खाने व खिलौने आदि दें। • शिशु जब बात करता है तब ध्यान देकर सुने। • चित्रों वाली किताब दिखाये व चित्रों के संबंध में पूछें व बतायें। • सही शब्द बोलने के लिये प्रेरित करें।	• शौचालय का उपयोग करना सिखायें। • हाथ पैर धोना सिखाये। • अपने हाथों से भोजन करने दें। • अन्य बच्चों के साथ खेलने दे, बातें करने दें, । वस्तुएं, खिलौने आदि निर्धारित स्थान से उठाये व रखने की आदत डाले। • नदी,तालाब, बगीचा, चिड़िया घर, मेला आदि घुमाने ले जायें। • शिशु के गुस्सा होने पर उसे शांत जगह में ले जाए व उसका ध्यान दूसरी तरफ बटाएं।	• लुका छिपी खेलने दें। • माचिस डिब्बी आदि से घर, गाड़ी बनाने को कहें व सहयोग करें। • फलों के स्वाद जैसा–खट्टा–मीठा आदि पूछे व बतायें। • पक्षियों की आवाज व चाल बतायें। • घर की व आसपास की सभी वस्तुओं के बारे में बताये व पूछें। • आकृति व रंग के आधार पर वस्तुएं छांटने दें। रंगों को बतायें। • आड़ी–तिरछी रेखाएं खींचवायें।

पाठ्यक्रम 3–6 वर्ष

1. संज्ञानात्मक विकास

देखकर पहचानना :–

कम उम्र वाले बच्चे हेतु	अधिक उम्र वाले बच्चे हेतु
• सामान्य वस्तुओं को पहचानना।	• विशिष्ट वस्तुओं को पहचानना।
• अवलोकन करना।	• सूक्ष्म अवलोकन करना।
• संख्या पूर्व अवधारणा विकसित करना। जैसे – कम–ज्यादा, हल्का–भारी, छोटा–बड़ा, ऊपर–नीचे, अंदर–बाहर, लंबा–नाटा, मोटा–पतला, चौड़ा–सकरा, दूर–पास।	• संख्या की अवधारणा विकसित करना।
• आकार पहचानना। जैसे – गोल, तिकोन, चौकोन	• आकार, क्रमीकरण समझ सकना।
• रंगों का मिलान करना।	• मूल रंग लाल, पीला,नीला, काला, सफेद पहचानना।
• अंकों, चित्रों, वस्तुओं का मिलान करना।	• पैटर्न बनाना, जमाना।
• छांटना एवं अंतर करना।	• वर्गीकरण करना।
• समानता बताना।	• क्रमबद्ध चिंतन।
	• क्रमिक सोच।
• वस्तुओं एवं घटनाओं को देखकर प्रश्न करना।	• तर्क विवेचन एवं समस्या समाधान।
• दृश्य विभेदीकरण। (चित्र)	• स्थान संबंधी अवधारणा।
	• तापमान संबंधी अवधारणा।
	• समय संबंधी अवधारणा।

सुनकर :–

• सामान्य एवं परिचित आवाज पहचानना व नकल करना।	• ध्वनि विभेदीकरण करना।
• विभिन्न आवाजों में अंतर कर पाना।	• प्रथम ध्वनि व अंतिम ध्वनि को पहचानना।

चखकर पहचानना :–

- चखकर मीठा कड़वा, तीखा, नमकीन पहचानना।
- वस्तुओं को स्वादानुसार वर्गीकृत करना।

सूँघकर पहचानना :–

- फूल, अगरबत्ती, जली हुई वस्तुओं की गंध, खाद्य पदार्थ की गंध पहचानना।
- वस्तुओं की सुगंध पहचान कर नाम बताना।

छूकर पहचानना :–

- स्पर्श करके कड़ा–मुलायम, गीला–सूखा, ठंडा–गरम पहचान कर नाम बताना व तुलना करना।
- बिना स्पर्श के मुलायम खुरदुरा–चिकना ,गीला–सूखा, ठंडा–गरम वस्तुओं के नाम बता पाना।

2. व्यक्तिगत,सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास

कम उम्र वाले बच्चे हेतु

- व्यक्तिगत स्वच्छता एवं सफाई।
- बैठने के स्थान को साफ रखना।
- स्वच्छता संबंधी आदतें विकसित करना।
- भोजन की सही आदत।
- खाने से पहले हाथ धोना।
- शौच की सही आदत।
- खेलने के बाद सामानों को व्यवस्थित रखना।
- आत्मविश्वास विकसित करना।
- अपने साथियों के साथ मिल जुलकर आंगन बाड़ी आना।
- अपने साथियों के साथ मिल जुलकर खेलना।

अधिक उम्र वाले बच्चे हेतु

- अपने आस–पास के वातावरण को साफ रखने में सहभागिता देना।
- अपने पहनने के कपड़े तह करके रखना।
- संपर्क में आने वाली सामग्रियों को व्यवस्थित करना।
- आत्मविश्वासी होना।
- सर्वधर्म समभाव की भावना विकसित करना।
- प्रेम, सहयोग, सद्भाव भाईचारा आपसी समझ एक दूसरे के हित आदि भावना का अनुकरण करना।

- सरल, घरेलू कार्यों में मदद करना।
- अपने से बड़ों के आदेशों का पालन करना।
- अपने से बड़ों को आदर करना।
- अच्छी आदतें सिखाना एवं अनुकरण करना।
- अपने मित्रों के नाम जानना।
- व्यक्तिगत कार्य के अवसर प्राप्त करना।
- खेलते समय खेल के नियमों का पालन करना।
- बिना पूछे दूसरों की सामग्रियों को न लेना।
- बाहर जाने के पहले अनुमति लेने की आदत डालना।

- दूसरों की सहायता करना।
- पशु–पक्षियों से प्रेम एवं प्रकृति से प्रेम का व्यवहार करना।
- अपने साथियों के जन्मदिन पर बधाई देने की आदतें विकसित करना।
- अपनी बारी की प्रतीक्षा करना।
- दूसरों की वस्तुओं को नुकसान न पहुँचाना।
- स्वअनुशासन की भावना विकसित करना।
- पानी का सदुपयोग करना।
- सामूहिक कार्यों का विकास करना।
- दूसरे बच्चे के लड़ाई झगड़ा को शांत कराना।
- रोते बच्चों को शांत कराना।
- जिद् अथवा चिड़चिड़ाहट पर नियंत्रण करना।
- डर, भय, क्रोध जैसे मनोभाव पर नियंत्रण करना।
- हार जाने पर उदास न होना।

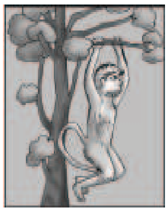

3. शारीरिक विकास

बड़ी मांस पेशियों में संतुलन

कम उम्र वाले बच्चे हेतु

- सीधे चलना
- पंजे के बल चलना।
- हाथ में वस्तु रखकर संतुलन बनाकर चलना।
- स्वयं कूदना

5. पकड़ना

अधिक उम्र वाले बच्चे हेतु

- दायें–बायें चलना
- ताल के साथ कदम मिलाकर चलना
- सिर–गर्दन में संतुलन बनाकर चलना।
- एक पैर से कूदना।
- उछालकर पकड़ना

- उछालना
- लुढ़काना
- सीधी दौड़
- लम्बी कूद
- मेढ़क दौड़
- फेंकना
- झूला झूलना, फिसलना
- रेंगना– खिसकना
- चढ़ना– उतरना

- रस्सी कूदना
- टप्पे देकर पकड़ना
- बाधा दौड़
- ऊँचीकूद
- तैरना
- पेड़ पर चढ़ना–उतरना
- रस्सी की जाली पर चढ़ना

छोटी मांस पेशियों का विकास

- कागज फाड़ना
- मटर, फल्ली छीलना
- चेन, बटन लगाना
- रूमाल तह करना
- एक बर्तन से दूसरे बर्तन में पानी डालना
  (छोटे मुँह वाले बर्तन से बड़े मुँह वाले बर्तन में पानी डालना)
- पिरोना
  (बड़े छेद से धागे पिरोना।)
- ताली–चुटकी बजाना।

- कागज को सीधे रेखा में फाड़ना।
- कागज को वर्गाकार, चौकोर आकृति में काटना व मोड़ना।
- जूते का लेस खोलना व बाँधना, लगाना।
- शर्ट पेंट तह करना।
- एक बर्तन से दुसरे बर्तन में पानी डालना।
  (छोटे मुँह वाले बर्तन से छोटे मुँह वाले बर्तन में पानी डालना)
- छोटे छेद से धागे पिरोना।
- लय के साथ ताली व चुटकी बजाना।

4. भाषायी विकास

सुनना

कम उम्र वाले बच्चे हेतु

- पास की आवाज सुनना।

अधिक उम्र वाले बच्चे हेतु

- विभिन्न प्रकार की आवाज सुनकर समझना।

- दूर की आवाज सुनना।
- धीमी व तेज आवाज को पहचानना।
- बड़बड़ गीत सुनना।
- लोरी गीत सुनना।
- अभिनय गीत सुनना।
- छोटी–छोटी कहानी सुनना।
- चित्र कहानी सुनना।
- सरल व छोटे निर्देशों को सुनना।
- सरल निर्देशों को सुनकर समझना।
- एक साथ दो निर्देशों को सुनकर समझना।
- वार्तालाप को सुनकर समझना।

- अभिनय व बालगीत सुनकर समझना।
- छोटी–छोटी कहानियां सुनकर समझना।
- छोटी परंतु वर्णनात्मक कहानी सुनकर समझना।
- निर्देशों को क्रमबद्ध ढंग से सुनकर समझना।
- परिवेशीय पहेली को सुनकर समझना।

बोलना

- स्वतंत्र वार्तालाप करना।
- अपने बारे में बताना।
- अपनी आवश्यकता की पूर्ति हेतु आग्रह करना।
- छोटी बातों को सुनकर दोहराना।
- छोटे वाक्यों को सुनकर दोहराना।
- कहानी सुनाना व गढ़ना।
- कहानी से संबंधित प्रश्न पूछना।
- पशु पक्षियों की आवाज की नकल करना।
- परिवार के बारे में बताना।

- स्वतंत्र वार्तालाप करना।
- आसपास के बारे में बताना।
- अपनी बात कह सकना।
- संवाद बोलना।
- किसी वस्तु पर 4–5 वाक्य बोल पाना।
- कहानी बताना एवं सुनी हुई कहानी को दोहराना।
- कहानी से संबंधित प्रश्न पूछना।
- अभिनय के साथ बोलना।

- परिवेशीय वस्तुओं के नाम बताना।
- चित्रों पर अपने विचार व्यक्त करना।
- तुकबंदी वाले शब्द बोलना।
- परिवेशीय वस्तु के बारे में बताना।
- चित्रों पर अपने विचार व्यक्त करना।
- देखी हुई घटना का वर्णन करना।

पढ़ना (पढ़ने की पूर्व तैयारी)

- चित्रों को पढ़ना
- वस्तुओं को देखकर बोलना।
- चित्रों को देखकर कहानी सुनाना।
- आकृतियों में अंतर पहचानना।
- चित्रों में अंतर करना।
- परिवेशीय चित्रों के बीच संबंध स्थापित करना।
- क्रियाओं को देखकर व्यक्त करना।
- समूह से भिन्न वस्तुओं को अलग करना।
- चित्रों को देखकर दो वाक्य बोलना।
- 6–10 वर्ण स्वतंत्र रूप से पहचानना।
- चित्रों को देखकर नाम बताना।
- चित्रों वस्तुओं में संबंध ढूँढ़ना।
- दृश्य विभेदीकरण।
- चित्रों/वस्तुओं में समानता बता पाना।
- वातावरण घटना अवसर को पहचान पाना।
- व्यक्ति की पोशाक देखकर वह कौन है बता पाना।
- चित्रों में कमी ढूँढ़ना
- चित्र और शब्द में संबंध ढूँढ़ना।
- चित्रों को देखकर तीन वाक्य बोल पाना।
- 10–30 वर्ण पहचानना।
- चित्र के माध्यम से शब्दों को पहचानना।
- शब्दों का निर्माण करना।
- शब्दों के प्रथम वर्ण को पहचानना।
- 2–3 मात्राओं को पहचानना।
- रेतीय स्वर व्यंजन पढ़ना।

लिखना (लिखने की पूर्व तैयारी)

- कंकड़, बीज को बनी हुई आकृति में जमाना।
- आड़ी/तिरछी रेखा खींचना।
- बिन्दुओं को जोड़कर आकृति बनाना।
- चुटकी से आकृति/अक्षर पर रंगोली

डालना।

- रेत, हवा, पानी में उंगली फिराना।
- चित्रों में उंगली फिराना।
- रेतीय अक्षर पर उंगली फिराना।
- गोल आकृति बनाना।
- कागज फाड़ना व मोड़ना
- कटी भिन्डी/आलू से ठप्पा लगाकर आकृति बनाना।
- हाथ के पंजे की छाप बनाना।
- भौमितिक आकृतियों से चित्र बनाना।
- आकृतियों को जोड़कर नई आकृति बनाना।
- ट्रेस करना।

- कलम को सही ढंग से पकड़ना
- स्वतंत्र आकृति बनाना।
- रंग/रेत भरना
- कट आउट से चित्र बनाना।
- कहानी के माध्यम से चित्र बनाना।
- अधूरे चित्रों को पूरा करना।

5. सृजनात्मक विकास

कम उम्र वाले बच्चे हेतु

- पंजों से छापना।
- भिंडी/आलू से ठप्पा लगाना।
- कागज फाड़ना व मोड़ना
- माला बनाना (मोती, फूल, पत्ती आदि)
- पत्तियों से तोरण, दोना, पत्तल बनाना।
- झंडी बनाना।
- ट्रेस करना।
- गीली मिट्टी से गोलियाँ बनाना।
- रेत से आकृति बनाना।
- सरल रेखा से आकृति बनाना।
- कागज मोड़कर आकृति बनाना।
- चित्रों में रंग भरना।
- पत्तियों से चित्र बनाना।
- स्प्रे वर्क करना।
- थ्रेड वर्क करना।

अधिक उम्र वाले बच्चे हेतु

- अंगूठे के छाप से आकृति बनाना।
- मिट्टी से खिलौना बनाना।
- ग्रीटिंग कार्ड बनाना।
- मुखौटों को ट्रेस करना।
- मिट्टी के गोलिया को रंगना।
- बिन्दु मिलाकर आकृति बनाना।
- अधूरे चित्रों को पूरा करना।
- विभिन्न आकृतियों के चित्र बनाना।
- चित्रों के अनुरूप रंग भरना।
- चित्रों को देखकर कहानी का सृजन करना।
- कोलाज वर्क करना।

अध्याय 3

मॉनीटरिंग की अवधारणा

परिभाषा –

1. ''किसी भी कार्य या अभियान का परिणाम प्राप्त करने के लिए कई चरणों से गुजरने की प्रक्रिया पर सतत निगरानी रखना और लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ना मॉनीटरिंग है।''

2. ''लक्ष्य को पाने के लिए प्रक्रिया पर सतत निगरानी रखना, उपलब्धियों को बढ़ाना तथा कमियों को सकारात्मक ढंग से दूर करना। लोगों में कार्य के प्रति ऊर्जा और उत्साहवर्धन ही अवलोकन है।

3. ''किसी लक्ष्य को पाने के लिए निरन्तर प्रयास करना, उपलब्धियों को बढ़ाना, प्रोत्साहित करना, परिणामों का मापन करना एवं प्राप्त सूचना के आधार पर आगामी कार्यक्रम को निर्धारित करना मॉनीटरिंग है।

4. निश्चित मापदण्डों और एवं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए व्यवस्था में सकारात्मक सुधार कर कार्यों में कुशलता लाना अवलोकन है।

5. लक्ष्य प्राप्ति के लिए हम कई चरणों से गुजरते हैं। हमारा ध्यान हमेशा लक्ष्य प्राप्ति पर होता है। इसके लिए हम कुछ मापदण्ड तैयार करते है और इन्ही मापदण्डों के आधार पर हम व्यवस्था में सकारात्मक सुधार लाते है।

मॉनीटरिंग का अर्थ यही होता है कि लोगों में कार्यक्षमता एवं कुशलता बढ़े। उनके अंदर सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो। उनकी उपलब्धियों के लिए प्रोत्साहन मिले, उनकी कमियों को स्नेह पूर्वक समझाकर दूर किया जावें ताकि अवलोकनकर्ता एवं कार्यकर्ता ऊर्जावान बनें और तत्पर होकर लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर हो। हमेशा उत्साहित होकर अपने कार्य को समय सीमा में संपादित करें।

आंगनबाड़ी का अवलोकन किसके द्वारा ?

स्वयं | स्थानीय समुदाय, ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत, जिला पंचायत | अन्य विभागीय

सेक्टर स्तर	विकासखंड स्तर	जिला स्तर	राज्य स्तर पर
1. Suppervisor	1. C.D.P.O.	1. D.P.O.	1. सचिव
2. C.A.C.	2. C.E.O.	2. D.W. C.D.P.O.	2. संयु. सचिव
3. B.R.G.	3. B. Ed. O.	3. D.Ed.O.	3. संचालक
4. Principal	4. B.R.C.C.	4. D.P.C.	4. संयु. संचालक
	5. B.R.G.	5. D.R.G.	4. सहा. संचालक
			5. एस.आर.जी.

सूचना तंत्र

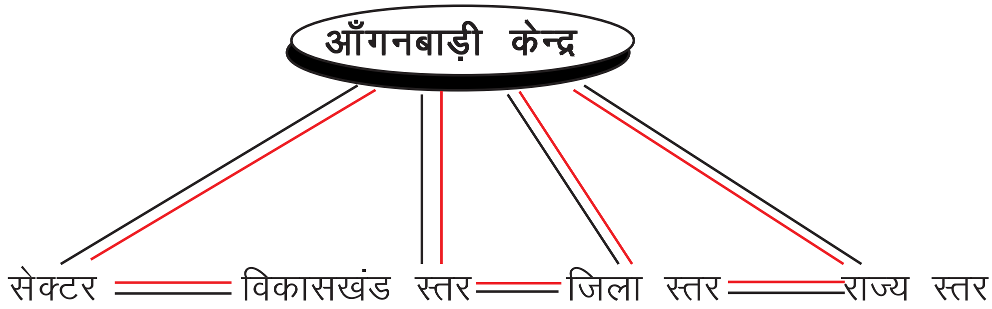

मॉनीटरिंग हमेशा प्रेरणात्मक हो, खुद को ऊँचा और दूसरों को नीचा बताने वाला न हो। मॉनीटरिंग उत्साहवर्धक हो, दोस्ताना हो तथा आवश्यकता को परक हो। जैसा हो रहा है वैसा ही देखना, पहचानना एवं विश्लेषण करना तथा उचित मार्गदर्शन करना तथा कमियों को त्वरित दूर करना अवलोकन है।

निरीक्षण, मॉनीटरिंग नहीं बल्कि फीडबैक लेने की प्रक्रिया है।

अवलोकन क्यों ?

प्रक्रिया को सतत जारी रखने, गति प्रदान करने एवं मार्गदर्शन के लिए अवलोकन आवश्यक है।

ई.सी.सी.ई. अवलोकन निम्न कारणों से आवश्यक है :–

1. वस्तु स्थिति की सही समझ के लिए।
2. कार्यकर्ता/सहायिका के मदद के लिए।
3. स्वयं/दूसरों के मूल्यांकन के लिए।
4. कमियों की पहचान कर निदान करने के लिए।
5. बच्चों में गुणवत्ता आकलन के लिए।
6. प्रक्रिया को सशक्त करने के लिए।
7. क्षमता विकास के लिए।
8. लक्ष्य को बेहतर तरीके से पाने के लिए।
9. पर्यवेक्षक/कार्यकर्ता/सी.ए.सी./सहायिका मे वस्तु स्थिति की पूर्ण समझ के लिए।
10. अनुभवों के आदान–प्रदान करने के लिए।
11. सूचनाओं का आदान–प्रदान कर कार्य करने के लिए।

12. नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए।

13. सभी स्तर पर विश्लेषण उपरांत विशेष कमियों का निदान के लिए।

14. विभाग के प्रत्येक स्तर पर सदस्यों की भूमिकाओं को सुनिश्चित करने के लिए।

अवलोकन के सुख अनंत होते हैं – इस्माइल्स

अध्याय 4

आँगनबाड़ी केन्द्र की मॉनीटरिंग कैसे ?

मॉनीटरिंग करने के लिए मॉनीटरिंगकर्ता को ई.सी.सी.ई. की समझ होना अति आवश्यक है। जिसमें विभिन्न पहलू जैसे– छः सेवायें –

1. पूरक पोषण आहार
2. टीकाकरण
3. स्वास्थ्य जाँच
4. संदर्भ सेवा
5. वृद्धि निगरानी, प्रोत्साहन एवं स्वास्थ्य पोषण
6. अनौपचारिक शिक्षा(3–6 वर्ष)

इन सभी के बारे में बारीकी से जानकारी हो। साथ ही प्रक्रिया की शुरूआत कक्षा सजावट एवं थीम के पाँचो क्षेत्रों की गतिविधियाँ सुनिश्वित करना आवश्यक है। साथ ही क्षमता विकास के तरीके और अच्छे पालकत्व की जानकारी हो। मॉनीटरिंगकर्ता में इन सभी योग्यताओं का होना जरूरी है। उसमे ऐसा कौशल हो कि वह वांछित जानकारी को प्राप्त कर सके।

मॉनीटरिंग करने के तरीके –

1. नियमित ढांचों से – सी. ए. सी., बी. आर. जी., सुपरवाईजर्स इन सभी के द्वारा चेक लिस्ट के माध्यम से।
2. बैठकों से सेक्टर, विकासखंड, जिला तथा राज्य स्तर पर एजूसेट की बैठकें।
3. भ्रमण और अवलोकन से।
4. अनौपचारिक – समुदाय के लोगों से आँगनबाड़ी की स्थिति के संबंध में चर्चा कर जानकारी प्राप्त करना।

मॉनीटरिग के उद्देश्य :–

1. सभी आँगनबाड़ी केन्द्रों को बेहतर बनाने हेतु।
2. कमिया व समस्याओं को पहचानकर त्वरित निराकरण हेतु।

3. कार्यकर्ताओं के आवश्यकताओं को पहचानकर आवश्यकतानुसार अकादमिक पोषण हेतु।

4. प्रदेश के शत्–प्रतिशत शिशुओं में पाँचों विकास को गति प्रदान करने हेतु।

5. कार्यकर्ताओं के कार्यक्षमता एवं कार्यकुशलता को बढ़ाने हेतु।

आँगनबाड़ी केन्द्रों के विकास हेतु विभिन्न इकाईयों की भूमिका

1. सहायिका की भूमिका –

* बच्चों को एकत्रित करते हुए निर्धारित समय में आँगनबाड़ी केन्द्र में उपस्थित होना।
* आँगनबाड़ी केन्द्र को व्यवस्थित करना।
* बच्चों की व्यक्तिगत स्वच्छता को देखना एवं पालको को सलाह देना।
* समय पर स्वच्छतापूर्वक पोषण आहार तैयार करना व खिलाना।
* दैनिक गतिविधियों में कार्यकर्ता का सहयोग करना।
* मंगल दिवस में कार्यकर्ता का पूर्ण सहयोग करना।
* अनौपचारिक शिक्षा के लिए स्थानीय वस्तुओं से सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण करना।
* आँगनबाड़ी केन्द्र को आकर्षक बनाने में सहयोग करना।
* सतत गृहभेंट के दौरान पालकों को उनकी भूमिका से अवगत कराना।
* कार्यकर्ता के अनुपस्थिति में केन्द्र का संचालन करना।
* सहायिका को बच्चों एवं पालकों के साथ मृदुभाषी एवं मित्रवत व्यवहार करना।

2. कार्यकर्ता की भूमिका –

* अपने आसपास के बच्चों को साथ लेते हुए निर्धारित समय में केन्द्र में उपस्थित होना।
* प्रार्थना पश्चात शिशुओं की व्यक्तिगत स्वच्छता की जाँच करना।
* केन्द्रो में समय सारणी, मूल्यांकन पत्रक, जन्मतिथि चार्ट, मौसम चार्ट, दिन–दिनांक–माह–वर्ष चार्ट निर्माण कर दीवार पर चस्पा करना, पॉकेट बोर्ड का निर्माण करना।

* केन्द्र को आकर्षक बनाए रखना।
* थीम कार्ड से रोचक गतिविधियाँ कराना।
* अभिलेखों का संधारण प्रतिदिन पूर्ण करना।
* गृहभेंट के दौरान पालकों से चर्चा करना एवं श्रेष्ठ पालकत्व के लिए प्रेरित करना।
* स्वसहायता समूह का गठन एवं उचित सलाह देना।
* थीम कार्डों का उचित रख रखाव करना।
* बच्चों एवं पालकों के साथ मित्रवत व्यवहार करना।

साप्ताहिक कार्य –

* मंगल दिवस(पोषण एवं स्वास्थ्य शिक्षा) का आयोजन करना।
* सप्ताह में पूर्ण किये गये थीम का मूल्यांकन करना।

मासिक कार्य –

* गोदभराई, जन्मदिन, अन्नप्रासन, किशोरी दिवस, टीकाकरण, वजन कार्यक्रम का संचालन करना।
* मासिक बैठकों में उपस्थित होकर आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराना।
* प्रत्येक 3 माह में ग्राम का सर्वेक्षण करना।
* प्रतिमाह उड़ान यात्रा/ थीम यात्रा का आयोजन कर जन समुदाय में जागरूकता लाना।
* जन जागृति हेतु नारों का लेखन।

3. पर्यवेक्षक(सुपरवाईजर्स) की भूमिका –

* आँगनबाड़ी केन्द्रों का अवलोकन – भौतिक परिवेश, बच्चों की व्यक्तिगत स्वच्छता, उपस्थिति, अभिलेखों की जाँच, समय सारणी के अनुसार गतिविधियाँ केन्द्र की समस्याओं पर चर्चा एवं निदान, जन सपंर्क तथा सर्वे का अवलोकन करना।
* सेक्टर में बैठक लेना।
* स्वसहायता समूहों की आर्थिक गतिविधियो के लिए मार्गदर्शन देना।

* परियोजना के बैठकों में उपस्थित होकर जानकारी उपलब्ध कराना।

* थीम कार्डों के माध्यम से की जाने वाली गतिवधियों का अवलोकन करना तथा समीक्षा करना।

* ग्राम में जनस्वास्थ्य चेतना शिविर का आयोजन करके आँगनबाड़ी केन्द्रों की समस्याओं का निदान करना।

* आँगनबाड़ी केन्द्रों में आँगनबाड़ी कार्यकर्ता/सहायिकाओं की उपस्थिति सुनिश्चित करना।

* पोषण आहार सप्ताह, खाद्यान्न दिवस, स्तनपान दिवस, शिशुओं का जन्म दिवस, बाल दिवस, गाँधी जयंती आदि कार्यक्रम का आयोजन करना।

* संकुल बैठक में उपस्थित होकर अपने सेक्टर की जानकारी एकत्र करके सी.डी.पी.ओ. एवं बी.आर.जी. को उपलब्ध कराना।

* कार्ड के गतिविधियों का अवलोकन करना –

1. वर्मतान सप्ताह के लिए थीम कौन सा है ?

2. प्रत्येक विकास पर प्रतिदिन कितने मिनट गतिविधयाँ कराई जा रही है ?

3. समीक्षा –

कौन–कौन से थीम पर कार्य हुआ है ?

कहाँ–कहाँ कड़िनाईयाँ आई ?

* थीम की गतिविधियों का मूल्यांकन।

* केन्द्रवार ग्रेडेशन करना।

4. बी. आर. जी. की भूमिका –

* आँगनबाड़ी कार्यकर्ता/सहायिका को आवश्यकतानुसार ई.सी.सी.ई. का प्रशिक्षण देना।

* आँगनबाड़ी केन्द्रों का अवलोकन –

1. कक्ष की साज सज्जा

2. मूल्यांकन पत्रक, जन्मतिथि चार्ट, समय सारणी चार्ट, मौसम चार्ट, थीम वेब चार्ट, दिन–दिनांक–माह–वर्ष चार्ट, उपस्थिति चार्ट का अवलोकन करना।

3. थीम कार्ड का रख–रखाव।

* कार्ड के माध्यम से हो रहे गतिविधियों का अवलोकन।
* अनौपचारिक शिक्षा का सतत आकलन।
* उपलब्धियों एवं कमियों को चिन्हांकन कर संभावनाओं की तलाश करना और उच्च स्तर तक सूचनाओं को प्रेषित करना।
* सहायक शिक्षण सामग्रियों का भरपूर प्रयोग हो रहा है या नहीं, अवलोकन करना।
* स्वयं, कार्डों का प्रयोग करते हुए कार्यकर्ताओं का उन्मुखीकरण करना।
* बच्चों एवं कार्यकर्ता का मूल्यांकन।
* स्थानीय समस्याओं के निदान हेतु जन संपर्क करना।
* केन्द्रवार एवं संकुलवार ग्रेडेशन एकत्र करना।
* संकुल, सेक्टर और विकासखंड की समीक्षा बैठक में उपस्थित होकर जानकारी सी.डी.पी.ओ. एवं बी.आर.सी. को उपलब्ध कराना।

5. सी. ए. सी. की भूमिका –

* प्रत्येक सी.ए.सी. द्वारा संकुल के अंतर्गत आने वाले आँगनबाड़ी केन्दों का मानीटरिंग करना।
* आँगनबाड़ी केन्द्रों की उपलब्धियों का चिन्हांकन कर सूचनाएँ विकासखंड के बी.आर.जी. को प्रेषित करना।
* आँगनबाड़ी केन्द्रों की कमियों का त्वरित निदान करना।
* त्वरित निदान न होने पर सूचना उच्च कार्यालय को प्रेषित करना।
* उच्च स्तर से प्राप्त सूचनाओं को केन्द्रों तक पहुँचाना।
* केन्द्रों की समस्याओं के निदान के लिए जन संपर्क।
* आदर्श केन्द्रों की उपलब्धियों से अन्य केन्द्रों को अवगत कराना।

* संकुल स्तर पर बैठक आयोजित करना जिसमें सुपरवाईजर, बी.आर.जी.(एम.जी.एम.एल./ई.सी.सी.ई.) की उपस्थिति सुनिश्चित करना।

* सी.ए.सी. को सेक्टर बैठक, विकासखंड स्तर की बैठक मे सी.डी.पी.ओ. बैठक में अपनी उपस्थिति देना।

6. सी. डी. पी. ओ. की भूमिका –

* आँगनबाड़ी केन्द्र की मॉनीटरिंग करना।

* महिला जन जागृति शिविर के दौरान पालको को ई.सी.सी.ई. की जानकारी से अवगत कराना।

* एक सेक्टर से प्राप्त उपलब्धियों को अन्य सेक्टर में प्रेषित करना।

* सेक्टरों से प्राप्त समस्याओं का विश्लेषण कर उचित निदान करना।

* विकासखंड स्तर पर समस्याओं एवं उपलब्धियों को जिला स्तर पर प्रेषित करना।

* जिला से प्राप्त सूचनाओं को सेक्टर तक पहुँचाना।

* परियोजना की मासिक बैठक में बी.आर.सी./बी.ई.ओ. को आमंत्रित करना।

* बी. आर. सी. की मासिक बैठक में सहभागिता निभाना।

* बी.आर.सी., बी.ई.ओ., बी.आर.जी., सी.ए.सी. से समन्वय स्थापित करना।

7. बी. ई. ओ./बी. आर. सी. की भूमिका –

* सी.डी.पी.ओ. एवं सुपरवाईजर्स के साथ समन्वय स्थापित करना।

* सेक्टर एवं जिला की बैठको में सहभागिता देना।

* सी.ए.सी. और बी.आर.जी. से उपलब्धियों और कमियों की जानकारी लेना।

* कमियों का विश्लेषण कर निदान करना।

* विकासखंड की बैठकें सुनिश्चित करना।

* उपलब्धियो और कमियों को जिला स्तर तक पहुँचाना।

* जिला से प्राप्त सूचनाओं को सेक्टर व संकुलों तक पहुँचाना।

* विकासखंड स्तर पर बैठक आयोजन करना व जानकारी एकत्र करना।

8. डी. ई. ओ./डी. पी. ओ./डाइट प्रिंसपल की भूमिका –

* विकासखंड से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर आँगनबाड़ी केन्द्रों की उपलब्धियों एवं कमियों को चिन्हांकित करेंगे।
* किसी आँगनबाड़ी केन्द्रों/विकासखंड की विशेष उपलब्धि है या कोई कमी है जिसका निदान जिले में नहीं हो पा रहा है। उसे राज्य स्तर को प्रेषित करेंगे।
* राज्य से प्राप्त सूचनाओं को विकासखंड को प्रेषित करेंगे।
* आँगनबाड़ी केन्द्रों का अवलोकन करेंगे।

9. आई. सी. डी. एस./एस. सी. ई. आर. टी. की भूमिका –

* महिला एवं बाल विकास विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के द्वारा आँगनबाड़ी केन्द्रों का निरीक्षण।
* समस्त जिलों से प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण करना तथा जिला, विकासखंड, संकुल, सेक्टर, आँगनबाड़ी केन्द्र की उपलब्धियों के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना।
* राज्य की सूचनाओं को समस्त जिला तक प्रसारित करना।
* राज्य स्तर परें एजूसेट के माध्यम से सीधे कार्यकर्ताओं से सपंर्क बनाए रखना।
* राज्य में ऑन लाइन सेवा उपलब्ध कराना।
* आँगनबाड़ी केन्द्रों की गतिविधियों से संबंधित उपलब्धियों एवं कमियों आदि का उल्लेख करते हुए पत्रिका का प्रकाशन करना।

महिला एवं बाल कल्याण विभाग

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

जिला कार्यक्रम अधिकारी

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान

एकिकृत बाल विकास परियोजना

विकासखंड स्त्रोत केन्द्र

सेक्टर

संकुल केन्द्र

आँगनबाड़ी केन्द्र

अध्याय 5

कार्यकर्ता का स्वमूल्यांकन

टीप – आँगनबाड़ी कार्यकर्ता इस प्रपत्र के आधार पर प्रतिमाह स्वमूल्यांकन करेंगे । हाँ की स्थिति में सही का निशान (✔) लगावें ना की स्थिति में यथावत छोड़ दें।

क्या ?

1. मुझे अपने आँगनबाड़ी केन्द्र के खुलने एवं बंद करने का समय पता है ? ☐
2. मेरे द्वारा सप्ताह में कितने दिन सही समय पर अपने केन्द्र को खोला जाता है ? ☐
3. मेरे द्वारा सप्ताह में कितने दिन देर से अपने केन्द्र को खोला जाता है ? ☐
4. केन्द्र को देर से खोलने के कारण –

   ....

   .... ।
5. मेरे और सहायिका के बीच समन्वय स्थापित है ? ☐
6. मैंने अपने केन्द्र में तार की जाली लगा ली है ? ☐
7. मैंने अपने केन्द्र में थीम वेब चार्ट का प्रदर्शन किया है ? ☐
8. मैंने अपने केन्द्र में जन्मतिथि चार्ट लगा लिया है ? ☐
9. मैंने अपने केन्द्र में मौसम चार्ट लगा लिया है ? ☐
10. मैंने अपने केन्द्र में दिन/दिनांक/माह/वर्ष चार्ट लगा लिया है ? ☐
11. मैंने अपने केन्द्र में मूल्यांकन पत्रक लगा लिया है ? ☐
12. मेरे केन्द्र में पॉकेट बोर्ड लगा हुआ है ? ☐
13. मेरे केन्द्र की दीवारों में ढ़ाई फीट ऊँची बहुरंगी पोताई हो गई है ? ☐
14. बहुरंगी दीवार के ऊपर छः इंच की पीली पट्टी बना दी गई है ? ☐
15. पीली पट्टी में 1 से 20 तक की गिनती और वर्णमाला लिखा जा चुका है। ☐
16. मेरे केन्द्र में बच्चों द्वारा किए गए सृजनात्मक वस्तुओं को रखने के लिए सृजनात्मक कोना है ? ☐ ☐
17. मेरे द्वारा मूल्यांकन पत्रक का उपयोग किया जाता है ? ☐
18. बच्चे आँगनबाड़ी केन्द्र में स्वेच्छा से आते है ? ☐
19. बच्चे केन्द्र में पूरे समय तक उत्साह पूर्वक गतिविधि करते है ? ☐
20. बच्चे आँगनबाड़ी केन्द्र में रोते हुए आते है ? ☐
21. मैं चंचल बच्चों को बिना भय दिखाए गतिविधियों में शामिल कर पाती हूँ ? ☐
22. मैं बच्चों को बिना आँख दिखाए समझा पाती हूँ ? ☐
23. मैं लड़ते हुए बच्चों को मिलजुलकर रहना सीखा पाती हूँ ? ☐
24. मैं रोते हुए बच्चे को प्यार से चुप करा लेती हूँ ? ☐
25. मैंने थीम कार्डों का रखरखाव सुव्यवस्थित/सुरक्षित किया है ? ☐

26. मैं प्रतिदिन थीम कार्ड पर गतिविधि कराती हूँ ?
27. मैं प्रतिदिन थीम के पाँच विकास की गतिविधियाँ संचालित कर पाती हूँ ?
28. मैं थीम कार्ड पर दिए गए निर्देशों का सही पालन करती हूँ ?
29. थीम कार्ड पर कार्य करते समय बच्चों ने किन–किन क्षेत्रों में विशेष रूचि दिखाई ? भाषायी, ☐ शारीरिक, ☐ सृजनात्मक ☐

30. थीम पर कार्य करने से बच्चों की उपस्थिति में वृद्धि हुई ?
31. थीम पर कार्य करने से बच्चों में परिवर्तन महसूस करती हूँ ?
32. थीम पर कार्य करने से बच्चों के पाँचों विकास की प्रक्रिया और मूल्यांकन करने में सक्षम हो पाई ?
33. प्रतिमाह पूर्ण किए गए थीम की जानकारी एकत्र करके रखती हूँ ?
34. मैंने सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण एवं संकलन किया है ?
35. मैं सहायक शिक्षण सामग्री के निर्माण में निरंतर वृद्धि कर पा रही हूँ ?
36. मेरे द्वारा सहायक शिक्षण सामग्री का उपयोग किया जाता है ?
37. मै थीम कार्ड के आधार पर नई सामग्री निर्मित कर पाती हूँ ?
38. मैं थीम कार्डों पर नवाचार का प्रयोग करती हूँ ?
39. मेरे द्वारा निर्मित सामग्री के उपयोग का प्रभाव, बच्चों के ऊपर नियमित देख पाती हूँ ?
40. मैं थीम का प्रयोग व विकास पर आने वाली कड़िनाईयों को पहचान पाती हूँ ?
41. गतिविधियाँ करते समय बच्चों को आने वाली कठिनाईयों का निराकरण कर पाती हूँ ?
42. मैं प्रत्येक थीम के पाँचों विकास की गतिविधि प्रतिदिन कराती हूँ ?
43. मैं प्रत्येक विकास की गतिविधि को संचालित कराने में पर्याप्त समय देती हूँ ?
44. मैं थीम व संबंधित गतिविधियों की जानकारी समुदाय को देती हूँ ?
45. मैं समुदाय को बच्चों के मस्तिष्क विकास की प्रक्रिया बताती हूँ ?
46. ज्ञान तन्तु(न्यूरान्स) कैसे झड़ते हैं ? इसकी जानकारी मैंने पालको को दे दी हैं ?
47. ज्ञान तन्तु को झड़ने से रोकने के लिए मैं 0 से 3 वर्ष के बच्चों के पालको के बीच प्रेरक गतिविधि कराती हूँ ?
48. मैं पालको को 0% (शून्य प्रतिशत) थप्पड़ वाले पालक बनने प्रेरित कर पाती हूँ ?
49. थीम की गतिविधि कराने पर अभिभावकों एवं समुदाय का सकारात्मक सहयोग मिलता है ?

50. मैं विवाह के पूर्व किशोर एवं किशोरी बच्चों के लालन–पालन एवं विकास की प्रक्रिया बताती हूँ ? ☐

51. मैं अपने समस्याओं से अपने उच्च अधिकारियों को अवगत करा पाती हूँ ? ☐

52. मुझे उच्च अधिकारियों का उचित मार्गदर्शन प्राप्त होता है ? ☐

53. मैं प्रतिदिन अभिलेखों का संधारण पूर्ण करती हूँ ? ☐

चेक लिस्ट

आँ.बा.केन्द्र का नाम	–......................	केन्द्र क्रमांक	–	कोड क्रमांक	– ....
कार्यकता का नाम	–	सहायिका का नाम	–	परिक्षेत्र	– ....
वि.ख. का नाम	–......................	जिला का नाम	–	अवलोकन दिनाँक	–......................

भौतिक संसाधन

निर्देश :– हाँ की स्थिति में सही निशान(✔) लगावें तथा नहीं की स्थिति में यथावत छोड़ दें।

विवरण

1. भवन उपलब्ध है। ☐

   यदि हाँ तो स्पष्ट करें शास. ☐ निजी ☐ किराया ☐

2. पेयजल की सुविधा है। ☐

   यदि हाँ तो क्या पानी चम्मू के द्वारा निकाला जाता है। ☐

3. शौचालय की व्यवस्था है। ☐

   यदि हाँ तो, क्या बच्चों द्वारा शौचालय का उपयोग किया जाता है। ☐

4. स्थानीय सहायक सामग्री की उपलब्धता है। ☐

   जैसे – कंकड़, बीज, रेत, कागज ....

5. खेल का मैदान है। ☐

6. ई.सी.सी.ई. का किट उपलब्ध है। ☐

7. दरी/टाटपट्टी उपलब्ध है। ☐

8. केन्द्र की दीवारों में बहुरंगी पुताई है। ☐ लेखन ☐ रंगीन चित्र ☐

9. निम्नलिखित चार्टों का प्रदर्शन एवं उपयोग हो रहा है –

जन्म तिथि चार्ट	उप. चार्ट	दिन/दिनांक/माह/वर्ष	मौसम चार्ट	मूल्यांकन चार्ट	थीम वेब चार्ट

10. आँगनबाड़ी में तार की जाली लगी है। ☐

11. यदि हाँ तो क्या तार की जाली में बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र का प्रदर्शन किया जा रहा है। ☐

12. क्या पालको द्वारा रचित चित्र, गीत, कहानी का प्रदर्शन किया जा रहा है। ☐

13. केन्द्र में पॉकेट बोर्ड उपलब्ध है। ☐

14. क्या पॉकेट बोर्ड में थीम कार्ड रखे गयें है। ☐

पढ़ाए गए ☐ पढ़ाए जा रहे ☐ पढ़ाए जाने वाले ☐

15. केन्द्र में स्वच्छता संबंधी निम्नलिखित वस्तुएँ उपलब्ध है।

वस्तुएँ	तेल	साबुन	कंघी	आईना	नेपकिन	अन्य
उपलब्ध हैं						
क्या उपयोग हो रहा है						

16. किट को सुरक्षित रखने की व्यवस्था है। ☐

"The Childhood show the man,
As morning shows the day."

''बालक मनुष्य का निदर्शन करता है, जिस प्रकार प्रातः, दिन को इंगित करता है।''

जॉन मिल्टन

प्रक्रिया(छः सेवाएँ)

1. पूरक पोषण आहार उपलब्ध है। ☐
2. माह में टीकाकरण नियमित होता है। ☐
3. माह में स्वास्थ्य की नियमित जाँच होती है। ☐
4. माह में संदर्भ सेवा के अंतर्गत लाभान्वित हितग्राहियों की संख्या(संख्या स्पष्ट करें) ☐
5. शिशुओं की वृद्धि निगरानी नियमित हो रही है। ☐
6. थीम कार्डों का नियमित उपयोग हो रहा है। ☐
7. विगत माह में आँगनबाड़ी केन्द्र लगने के कुल दिवस ☐
8. विगत माह में थीम कार्डों का उपयोग कितने दिन किया गया। ☐
9. विगत माह में थीम कार्डों का उपयोग कितने दिन नहीं किया गया। ☐

   उपयोग नहीं किए जाने के कारण –

   ....

   ....।
10. प्रतिदिन पाँचों विकास पर कार्य किया जा रहा है। ☐
11. माह में थीम प्रक्रिया का पालकों एवं जन समुदाय के समक्ष प्रस्तुतीकरण होता है। ☐
12. पिछली बार जन समुदाय के समक्ष प्रस्तुतीकरण कब किया गया।

    दिनांक लिखे। ☐☐☐
13. जन समुदाय के समक्ष आगामी प्रस्तुतीकरण का दिनांक लिखे। ☐☐☐
14. अब तक उपयोग किए गए थीमों की संख्या (संख्या स्पष्ट करें) ☐

निर्देश :– दीवार पर लगे थीम वेब चार्ट में भरे गए दिनांक को देखें चर्चा कर थीमों की संख्या लिखें।

15. उपयोग के बाद कार्ड सुरक्षित रखा जा रहा है। ☐

16. शिशुओं को स्वचछता के लिए प्रतिदिन प्रोत्साहित किया जाता है। ☐

17. अवलोकन के दिन विकास क्षेत्रों में किए गए क्रियाकलाप – ☐

संज्ञानात्मक विकास	शारीरिक विकास	संवेगात्मक विकास	भाषायी विकास	सृजनात्मक विकास

18. उड़ान/थीम यात्रा प्रतिमाह निकाला जाता है।

19. इस वर्ष उड़ान उत्सव मनाया गया है।

20. पालकों से प्रतिदन भेंटकर शिशुओं के मस्तिष्क विकास की प्रक्रिया पर चर्चा की जाती हैं ।

बच्चों में उपलब्धियाँ

निर्देश :— अवलोकनकर्ता बच्चों से गतिविधि कराकर मोटे तौर पर प्रतिशत का अनुमान लगाकर सही निशान(✔) लगावें। साथ ही वर्ष के प्रारंभ में और बाद में होने वाले परिवर्तनों का आकलन भी करें।

विवरण

	विवरण	25%	50%	75%	100%
1.	कितने प्रतिशत बच्चे संज्ञानात्मक विकास की गतिविधियों को कर पाते है।	☐	☐	☐	☐
2.	बच्चे केन्द्र में साफ–सुथरे आते है। यदि हाँ तो	☐	☐	☐	☐
	(अ) नाखून कटे हुए है।	☐	☐	☐	☐
	(ब) कपड़े साफ है।	☐	☐	☐	☐
	(स) दाँत साफ है।	☐	☐	☐	☐
	(द) बालों में कंघी किए है।	☐	☐	☐	☐
	(इ) भोजन के पहले एवं शौच के बाद साबुन से हाथ धोते हैं।	☐	☐	☐	☐
	(फ) शौच के बाद शौचालय में पर्याप्त पानी डालते हैं।	☐	☐	☐	☐
3	प्रत्येक क्रियाकलाप में बच्चों की सक्रिय सहभागिता रहती है।	☐	☐	☐	☐
4.	बच्चे कार्डों का उपयोग कर यथा स्थान रखते हैं।	☐	☐	☐	☐
5.	शारीरिक विकास की गतिविधियों को कर पाते हैं।	☐	☐	☐	☐
	क छोटी माँसपेशियाँ	☐	☐	☐	☐
	ख बड़ी माँसपेशियाँ	☐	☐	☐	☐
7.	सभी बच्चे मिलजुलकर रहते है।	☐	☐	☐	☐
8.	थीम से संबंधितकहानी/कविता को बच्चे हाव भाव के साथ सुना पाते है।	☐	☐	☐	☐
9.	बच्चे शब्द चित्र कार्ड को पहचानते है।	☐	☐	☐	☐

10. बच्चे चित्र पठन कर पाते है। ☐☐☐☐

11. बच्चे स्वतंत्र रूप से चित्र बनाते है। ☐☐☐☐

12. केन्द्र में बच्चे द्वारा बनायी गयी वस्तुएँ संग्रहित है। ☐☐☐☐

13. केन्द्र में माता–पिता द्वारा बनायी गयी वस्तुएँ संग्रहित है। ☐☐☐☐

14. बच्चे साँप सीढ़ी का खेल, खेल पाते है। ☐☐☐☐

15. बच्चे रेलगाड़ी का खेल, खेल पाते है। ☐☐☐☐

16. बच्चे रंग, आकार, आकृति का विशेष खेल, खेल पाते है। ☐☐☐☐

17. बच्चे अपनी बात कह पाते है। ☐☐☐☐

18. बच्चे स्वयं नाक साफ करने हेतु नेपकिन का उपयोग करते हैं। ☐☐☐☐

अध्याय 6

सामान्य चेक लिस्ट

1. आपके द्वारा किन–किन थीम पर बच्चों को प्रत्यक्ष अवलोकन कराया गया है ?

....

....

....

....।

2. आपके द्वारा थीम पर कार्य करने से बच्चों को किन–किन क्षेत्रों में विशेष रूचि दिखाई दी ?

....

....

....

....।

3. थीम पर कार्य करते समय आपको किस थीम के गतिविधि में कठिनाई प्रतीत हुई, उन्हें कैसे दूर किया ?

कठिनााई के बिन्दु	कठिनाई को दूर करने के लिए किया गया कार्य
______________________	______________________
______________________	______________________
______________________	______________________
______________________	______________________

4. अवलोकन कर्ता के सामने प्रस्तुत कठिनाई के क्षेत्र व उनके द्वारा उस कठिनाई को दूर करने के लिए किया गया कार्य –

कठिनााई के बिन्दु	कठिनाई को दूर करने के लिए किया गया कार्य
______________________	______________________
______________________	______________________
______________________	______________________
______________________	______________________
______________________	______________________
______________________	______________________

5. कठिनाई के ऐसे बिन्दु जिसे अवलोकनकर्ता द्वारा समाधान नहीं किया जा सका और उसके द्वारा समस्या के निवारण हेतु उच्च अधिकारियों को प्रेषित किया गया।

....

....

....

.... ।

6. किट के अलावा अन्य उपयोग में लाई जाने वाली सहायक सामग्री का विवरण

....

....

....

.... ।

7. अवलोकन कर्ता के द्वारा केन्द्र के पूर्णतः अवलोकन के पश्चात् उस आँगनबाड़ी केन्द्र को दिए जाने वाला ग्रेड –

A	B	C

8. विशेष टीप :–

....

....

....

.... ।

दिनांक

अवलोकन कर्ता का नाम –

पद नाम –

हस्ताक्षर –

अनौपचारिक शिक्षा
आँगनबाड़ी केन्द्र का प्रपत्र

1. केन्द्र का नाम – ....क्रमांक – .... कोड क्र. – ....
2. आँगनबाड़ी केन्द्र का प्रकार – (1) मूल (2) मिनी
3. आँ.बा. परिक्षेत्र का नाम – ....वि.खं. का नाम – ....
4. कार्यकर्ता का नाम – .... योग्यता – ....
5. सहायिका का नाम – .... योग्यता – ....
6. आँगनबाड़ी केन्द्र की कुल दर्ज संख्या(3 से 6 वर्ष) –

बालिका	बालक	योग

7. आँगनबाड़ी केन्द्र में लाभान्वित शिशुओं की संख्या(3 से 6 वर्ष) –

बालिका	बालक	योग

8. कार्यकर्ता/सहायिका ने ई.सी.सी.ई. प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

हाँ ☐ नहीं ☐

9. केन्द्र के संचालन में समुदाय की सहभागिता नियमित मिलती है।

हाँ ☐ नहीं ☐

10. केन्द्र में निम्नांकित सामग्री उपलब्ध है।(हाँ की स्थिति में सही(✔)निशान लगायें।)

सामग्री	तार की जाली	पॉकेट बोर्ड	रंगीन बोर्ड	स्थानीय सामग्री	बच्चों द्वारा निर्मित सामग्री	विशेष

11. केन्द्र में निम्नलिखित चार्टों का उपयोग बच्चों के द्वारा किया जाता है।(हाँ की स्थिति में सही(✔)निशान लगायें।)

उप. चार्ट	दिन/दिनांक/माह/वर्ष चार्ट	मौसम चार्ट	जन्म–तिथि	अन्य	विशेष

12. निम्नलिखित विकास-क्षेत्रों में कितने मिनट तक गतिविधि कराते है।

संज्ञानात्मक विकास ☐

व्यक्तिगत सामाजिक एवं संवेगात्मक ☐

शारीरिक विकास ☐

भाषायी विकास ☐

सृजनात्मक विकास ☐

13. प्रतिमाह 4 थीम की गतिविधियाँ करायी जाती है। हाँ ☐ नहीं ☐
यदि नहीं तो कारण ....।

संकुल/सेक्टर स्तरीय रिपोर्ट प्रपत्र

1. संकुल/सेक्टर का नाम – ....

2. वि.ख. का नाम – .... जिला का नाम – ....

3. आँ.बा. केन्द्रों की संख्या – ☐ मिनी आ.बा. केन्द्रों की संख्या – ☐

4. केन्द्रो में कार्यकर्ताओं की संख्या – ☐ सहायिकाओं की संख्या – ☐

5. ई.सी.सी.ई. प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की संख्या – ☐

6. दर्ज संख्या – बालक ☐ बालिका ☐ कुल ☐

7. लाभान्वित संख्या – बालक ☐ बालिका ☐ कुल ☐

8. ऐसे केन्द्रों की संख्या जहाँ समुदाय की सहभागिता नियमित मिलती है। ☐

9. ऐसे केन्द्रों की कुल संख्या जहाँ निम्नलिखित सामग्री आवश्यक है। ☐

10. ऐसे केन्द्रों की संख्या जहाँ निम्नलिखित चार्टों का उपयोग बच्चों के द्वारा किया जाता है। ☐

11. ऐसे केन्द्रों की संख्या जहाँ प्रतिमाह 4 थीम की गतिविधियाँ की जाती है। ☐

12. ऐसे केन्द्रों की संख्या जहाँ ई.सी.सी.ई. की गतिविधियाँ अच्छी तरह से चल रही है।

चलने वाले केन्द्रों के नाम	चलने के कारण
________________________ ________________________	________________________ ________________________

13. ऐसे केन्द्रों की संख्या जहाँ ई.सी.सी.ई. की गतिविधियाँ अच्छी तरह से नहीं चल रही है।

नहीं चलने वाले केन्द्रों के नाम	नहीं चलने के कारण
____________	____________
____________	____________

14. सफलता पूर्वक न चलने वाले केन्द्रों की समस्याओं के लिए किए गए समा–धान/प्रयास –

केन्द्रों के नाम	समाधान के लिए प्रयास
____________	____________
____________	____________

15. सफलता पूर्वक चलने वाले केन्द्रों को दिए गए प्रोत्साहन का विवरण –

केन्द्रों के नाम	प्रोत्साहन का विवरण
____________	____________
____________	____________

हस्ताक्षर

सुपरवाईजर्स/बी.आर.जी./सी.ए.सी.

विकासखंड स्तरीय रिपोर्ट प्रपत्र

1. विकासखंड का नाम – .... जिला का नाम – ....
2. परिक्षेत्र की कुल संख्या –................. पर्यवेक्षकों की कुल संख्या – ....
3. विकासखंड में आँगनबाड़ी केन्द्रों की कुल संख्या – ☐
4. विकासखंड में आँगनबाड़ी केन्द्रों में कार्यकर्ताओं की कुल संख्या – ☐
5. विकासखंड में आँगनबाड़ी केन्द्रों में सहायिकाओं की कुल संख्या – ☐
6. विकासखंड में आँगनबाड़ी केन्द्रों में दर्ज की कुल संख्या –

बालक	बालिका	योग

सामाजिक

का	कि	योग

7. विकासखंड में ई.सी.सी.ई. प्रशिक्षित पर्यवेक्षकों की कुल संख्या – ☐
8. विकासखंड में ई.सी.सी.ई. प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की कुल संख्या – ☐
9. ऐसे केन्द्रों की कुल संख्या जहाँ समुदाय की सहभागिता है। ☐
10. ऐसे केन्द्रों की कुल संख्या जहाँ निम्न सामग्री उपलबध है–

सामग्री	तार की जाली	पॉकेट बोर्ड	रंगीन बोर्ड	स्थानीय सामग्री	बच्चों द्वारा निर्मित सामग्री	विशेष

11. ऐसे केन्द्रों की कुल संख्या जहाँ निम्न चार्टों का उपयोग बच्चों के द्वारा किया जाता है –

चार्ट	उप. चार्ट	दिन माह वर्ष चार्ट	मौसम चार्ट	जन्म तिथि	अन्य	विशेष

12. ऐसे केन्द्रो की कुल संख्या जहाँ प्रतिमाह 4 थीम की गतिविधियाँ की जाती है। ☐
13. विकासखंड में आँगनबाड़ी केन्द्रों की कुल संख्या जहाँ ई.सी.सी.ई. का संचालन सफलतापूर्वक होता है –

सेक्टर का नाम	केन्द्रों की संख्या	अच्छी चलने के कारण

14. ऐसे केन्द्रों की कुल संख्या जहाँ ई.सी.सी.ई. की गतिविधि अच्छी नहीं चल रही है –

सेक्टर का नाम	केन्द्रों की संख्या	कारण

15. अच्छे न चलने वाले केन्द्रों के समस्याओं को दूर करने के लिए किए गए प्रयास विवरण – ....

.... ।

16. सफलतापूर्वक संचालित केन्द्रों को दिए गए प्रोत्साहनों का विवरण –

....

.... ।

क्र.	**सेक्टर का नाम**	आँगनबाडी केन्द्रों की संख्या			वि.ख. में A ग्रेड का प्रतिशत	सेक्टर का ग्रेड
		ग्रेड A	ग्रेड B	ग्रेड C		

ग्रेड ''ए'' = 75 प्रतिशत से अधिक ''ए'' ग्रेड के आँगनबाड़ी वाले सेक्टर

ग्रेड ''बी'' = 50 प्रतिशत से अधिक ग्रेड ''ए'' से कम ''बी'' ग्रेड के आँगनबाड़ी वाले सेक्टर

ग्रेड ''सी'' = 50 प्रतिशत से अधिक ग्रेड ''बी'' से कम ''सी'' ग्रेड के आँगनबाड़ी वाले सेक्टर

जिला स्तरीय रिपोर्ट प्रपत्र

1. जिला का नाम –
2. विकासखंड की कुल संख्या –
3. ई.सी.सी.ई. हेतु चयनित विकासखंड की संख्या –
4. जिला में पदस्थ परियोजना अधिकारी की संख्या –
5. जिला में पदस्थ कुल पर्यवेक्षकों की संख्या –
6. जिला में पदस्थ कुल आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की संख्या –
7. जिला में पदस्थ कुल आँगनबाड़ी सहायिकाओं की संख्या –
8. जिला में ई.सी.सी.ई. प्रशिक्षित कुल पर्यवेक्षको की संख्या –
9. जिला में ई.सी.सी.ई. प्रशिक्षित कुल आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की संख्या –
10. जिला में आँगनबाड़ी के कुल संख्या –
11. जिले में बच्चों की कुल संख्या –

बालक	बालिका	योग

नामांकित

का	कि	योग

12. जिले में लागू ई.सी.सी.ई. के कुल आँगनबाड़ी केन्द्रों की संख्या –
13. जिले में आँगनबाड़ी केन्द्रों की कुल संख्या जहाँ सामुदाय की सहभागिता है।
14. ऐसे केन्द्रों की संख्या जहाँ निम्न सामग्री उपलब्ध है –

सामग्री	तार की जाली	पॉकेट बोर्ड	रंगीन बोर्ड	स्थानीय सामग्री	बच्चों द्वारा निर्मित सामग्री	विशेष

15. ऐसे केन्द्रो की कुल संख्या जहाँ निम्न चार्ट का उपयोग बच्चों के द्वारा किया जाता है –

चार्ट	उप. चार्ट	दिन माह वर्ष चार्ट	मौसम चार्ट	जन्म तिथि	अन्य	विशेष

16. ऐसे केन्द्रों की कुल संख्या जहाँ प्रतिमाह 4 थीम की गतिविधियाँ की जाती है।
17. जिले में आँगनबाड़ी केन्द्रों की कुल संख्या जहाँ ई.सी.सी.ई. का संचालक सफलतापूर्वक हो रहा है –

अच्छी चलने के कारण	विकासखंड का नाम	परिक्षेत्र की संख्या	आँगनबाड़ी केन्द्रों की संख्या

18. ऐसे केन्द्रों की कुल संख्या जहाँ ई.सी.सी.ई. की गतिविधि अच्छी नहीं चल रही है –

विकासखंड का नाम	परिक्षेत्र की संख्या	आँगनबाड़ी केन्द्रों की संख्या	अच्छी नहीं चलने के कारण

19. अच्छे न चलने वाले केन्द्रों के समस्याओं को दूर करने के लिए किए गए प्रयास

विवरण – ....

....।

20. सफलतापूर्वक संचालित केन्द्रों को दिए गए प्रोत्साहनों का विवरण –

....

....।

ग्रेड ''ए'' = 75 प्रतिशत से अधिक ''ए'' ग्रेड के आँगनबाड़ी वाले विकासखंड

ग्रेड ''बी'' = 50 प्रतिशत से अधिक ग्रेड ''ए'' से कम ''बी'' ग्रेड के आँगनबाड़ी वाले विकासखंड

ग्रेड ''सी'' = 50 प्रतिशत से अधिक ग्रेड ''बी'' से कम ''सी'' ग्रेड के आँगनबाड़ी वाले विकासखंड

समीक्षा बैठक

1. सुपरवाईजर्स / सी.ए.सी. / बी.आर.जी. द्वारा तय किए गए नर्धारित लिपि में मासिक बैठक ली जाएगी।
2. बैठक में उपस्थित समस्त आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं से उनके द्वारा कराए गए ई.सी.सी.ई. क्रियाकलापों का फीड बैक(लिखित / मौखिक) लिया जावेगा।
3. इनके अलावा समीक्षा में आई समस्याओं के निराकरण हेतु सार्थक प्रयास किया जायेगा और सफल कार्यों को प्रोत्साहन किया जावेगा।
4. आगामी माह में किए जाने वाले पाठ्यक्रम / कार्यक्रम की रूपरेखा तय की जावेग

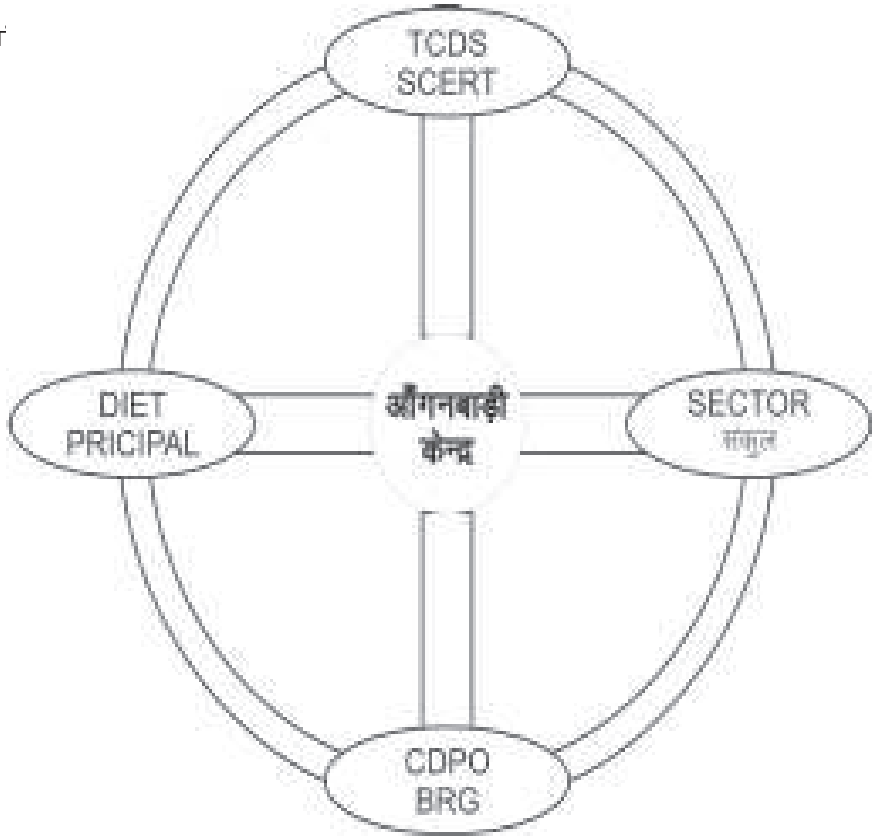

उर्पयुक्त समय चक्र के अनुसार –

1. सुपरवाइजर्स / सी.ए.सी. / बी.आर.जी.– कार्यकर्ताओं की बैठक लेंगे।
2. सी.डी.पी.ओ. / बी.आर.सी.– सुपरवाइजर्स, सी.ए.सी.,बी.आर.जी.,कार्यकर्ताओं की बैठक लेंगे।
3. डी.पी.ओ. / डी.आर.जी. – सी.डी.पी.ओ. व बी.आर.जी. की बैठक लेंगे।

मूल्यांकन पत्रक संज्ञानात्मक विकास हेतु

क्रमांक	नाम	उम्र	कम–ज्यादा	छोटा–बड़ा	लंबा–नटा	मोटा–पतला	ऊपर–नीचे	अंदर–बाहर	हल्का–भारी	दूर–पास	चौड़ा–सँकरा	आकार पहचानना।
1												
2												
3												
4												
5												
6												
7												
8												
9												
10												
11												
12												
13												
14												
15												
16												
17												
18												
19												
20												
21												
22												
23												
24												

आकार क्रमीकरण	रंग क्रमीकरण	क्रमबद्ध चिंतन	रंगों का मिलान करना	रंग बनाना	छाँटना	अंतर करना	पैटर्न जमाना और बनाना	वर्गीकरण	तर्क विवेचन	दृश्य विभेदीकरण	स्थान संबंधी अवधारणा	सुनकर पहचानना	ध्वनि विभेदीकरण	सूँघकर पहचानना	स्वाद पहचानना	छूकर पहचानना

शारीरिक विकास

बड़ी माँसपेशियाँ

क्रमांक		
नाम		
कूदना	एक पैर	
	दो पैर	
पंजे के बल चलना		
ताल के साथ कदम मिलाकर चलना		
सिर व गर्दन में संतुलन बनाना		
उछालना पकड़ना		
फेंकना पकड़ना		
टप्पे देकर पकड़ना		
सीधी दौड़		
बाधा दौड़		
झूलना फिसलना		
चलना उतरना		
रेंगना खिसकना		

छोटी माँसपेशियाँ

क्रमांक		
नाम		
मटर, फल्ली छिलना		
काटना, मोड़ना		
ताली, चुटकी		
लय के साथ ताली, चुटकी		
चैन, बटन लगाना		
कपड़ें तह करना		
बर्तन में पानी डालना	चौड़े मुँह वाले	
	संकरे मुँह वाले	
कंकड़ बिनना		
फिरोना	छोटे छेद	
	बड़े छेद	

भाषायी विकास

	क्रमांक
	नाम
	आवाज सुनकर पहचानना
	गीत कहानी सुनाना
	संवाद बोलना
	चित्र पठन
	अभिनय करना
	तुक बंदी वाले शब्दा बोलना
	शब्द चित्र बनाना
	वर्ण पहचानना
	निर्देशों को सुनकर समझना
	पहेलियाँ बूझना

सृजनात्मक विकास

	क्रमांक
	नाम
	पंजे छापना
	तोरन, दोना, पत्तल बानाना
	झण्डी बानाना
	ट्रेस करना
	स्प्रे वर्क करना
	मिट्टी के खिलौने बनाना
	थ्रेड वर्क करना
	कोलाज वर्क
	रेत में आकृति बनाना
	गुड़िया बानाना
	बिन्दु मूिलाकर चित्र बानाना
	रंग भरना
	स्वतत्र चित्र व कागज के वस्तुएँ बनाना

समीक्षा बैठक

क्र.	स्तर	भाग लेने वाली इकाई	समय दिवस	एजेंडा	कार्ययोजना
1.	स्थानीय स्तर	जनसमुदाय, ग्राम प्रतिनिधि, कार्यकर्ता, सहायिका		स्थानीय समस्या, उनका सहयोग	समस्याओं का निराकरण
2.	सेक्टर/संकुल	ई.सी.सी.ई. कार्यकर्ता, पर्यवेक्षक, सी.ए.सी., बी.आर.जी.		ई.सी.सी.ई. का विश्लेषण, उपलब्धियाँ, कमियाँ, समस्याएँ	सुझाव कार्ययोजना
3.	विकास खंड	सी.ए.सी., सी.डी.पी.ओ., सुपरवाइजर्स, कार्यकर्ता, बी.आर.जी.		ई.सी.सी.ई. का विश्लेषण, उपलब्धियाँ, कमियाँ, समस्याएँ	सुझाव कार्ययोजना
4.	जिला	डी.पी.ओ., सुपरवाइजर्स, बी.आर.सी.सी., डी.आर.जी., डी.पी.सी.			

कार्यकर्ता का स्वमूल्यांकन

1. मुझे पता है आँगनबाड़ी केन्द्र लगने का समय सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक है ।
2. सप्ताह में कितने दिन मेंरी आँगनबाड़ी देर से लगाती है ?
3. यदि देर से लगाते हैं तो कितनी देर से ?
4. क्या सहायिका कार्यों में सहयोग करती है ?
5. क्या केन्द्र में मूल्यांकन चार्ट पूर्ण किया जा चुका है ?
6. क्या निम्नांकित चार्टों का प्रदर्शन एवं उपयोग हो रहा है –

जन्म तिथि	उप. चार्ट	दिन माह वर्ष चार्ट	मौसम चार्ट	मूल्यांकन चार्ट	थीम वेब चार्ट

7. मेरे द्वारा कितने दिन, समय से पूर्व आँगनबाड़ी केन्द्र बंद किया जाता है ?
8. मेरे द्वारा कितने समय पूर्व केन्द्र बंद किया जाता है ?
9. क्या बच्चे आँगनबाड़ी केन्द्र आने से कतराते हैं ?
10. क्या बच्चे आँगनबाड़ी केन्द्र में पूरे समय तक रहते हैं ?
11. क्या बच्चे आँगनबाड़ी केन्द्र आने के बाद रोने लगते हैं ?
12. क्या पेयजल की सुविधा है ?
13. क्या केन्द्र में शौचालय की व्यवस्था है, यदि हाँ तो शौचालय का उपयोग नियमित बच्चों द्वारा किया जाता है ?
14. स्थानीय सहायक सामग्री की उपलब्धता है। (जैसे – कंकड़, बीज, रेत, कागज, लकड़ी , अन्य ...., ..., ..., ...)
15. क्या पॉकेट बोर्ड उपलब्ध है ?
16. क्या केन्द्र में तार की जाली है ?
17. क्या केन्द्र में दरी, टाटपट्टी उपलब्ध है ?
18. क्या केन्द्र की दीवारों पर बहुरंगी पुताई हुई है ?
19. क्या केन्द्र में ई.सी.सी.ई. किट उपलब्ध है ?

20. क्या किट बाक्स में निर्धारित सभी कार्ड्स उपलब्ध हैं ?
21. क्या समस्त कार्ड्स व्यवस्थित एवं सुरक्षित हैं ?
22. क्या उपयोग में लाए गए कार्ड वापस सुरक्षित रखे गये हैं ?
23. क्या कार्डों का उपयोग बच्चों द्वारा नियमित किया जाता है ?
24. अब तक मैंने कितने थीम पर कार्य कर लिया है ?
25. क्या मैं, थीमकार्ड की सहायता से पाँचों विकास क्षेत्र पर गतिविधियाँ करा पा रही हूँ ?
26. क्या मैं गतिविधियाँ कराते समय बच्चों की रूचियों पर ध्यान देती हूँ ?
27. क्या थीम कार्ड का उपयोग करने से बच्चों की उपस्थिति में वृद्धि हुई ?
28. क्या थीम कार्ड से गतिविधि कराने से बच्चों को लाभ हुआ ?
29. क्या थीम कार्ड से शिक्षण कराने से मुझे लाभ हुआ ?
30. क्या मैंने सहायक सामग्री का संकलन कर प्रदर्शन हेतु केन्द्र में एक निश्चित स्थान निर्धारित किया है ?
31. क्या मेरे द्वारा सहायक शिक्षण सामग्री का भरपूर उपयोग किया जा रहा है ?
32. थीम कार्ड पर कार्य करते समय मुझे किस थीम एवं किस विकास क्षेत्र पर कठिनाई महसूस हुई ?
33. क्या मैंने प्रतिदिन 20–20 मिनट प्रत्येक विकास क्षेत्र पर आधारित गतिविधियाँ कराती हूँ ?
34. थीम से गतिविधि कराने पर अभिभावकों एवं समुदाय की सहभागिता एवं प्रतिक्रिया कैसी रही ?
35. क्या मुझे समय समय पर उच्च अधिकारियों का समर्थन प्राप्त हो रहा है ?
36. क्या मैं प्रतिदिन अभिलेखों का संधारण करती हूँ ?
37. क्या मैं बच्चों को गतिविधि कि दौरान प्रत्यक्ष अवलोकन करवाती हूँ ?
38. क्या मैं पालकों को श्रेष्ठ पालकत्व के लिए प्रेरित करती हूँ ?
39. क्या मेरे द्वारा इस महीने कोई नवाचार किया गया है ?
40. क्या मेरे द्वारा इस महीने उड़ान उत्सव मनाया गया है ?
41. क्या मैं अपने केन्द्र को एक प्रेरक केन्द्र के रूप में प्रस्तुत कर सकती हूँ ?

आँगनबाड़ी केन्द्रों में समुदाय के साथ गतिविधियाँ

0 से 6 वर्ष के बच्चों के शारीरिक, बौद्धिक और शैक्षिक विकास के लिए महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा योजनाबद्ध तरीके से सघन प्रयास किए जा रहे हैं। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप शिशु मृत्यु दर, मातृ मृत्यु दर एवं बच्चों के कुपोषण की प्रतिशत दर में कमी आयी है। इन प्रयासों के बावजूद शत्–प्रतिशत बच्चों का आँगनबाड़ी केन्द्रों में नामांकन और नियमित उपस्थिति आज भी एक चुनौती है। इस समस्या का विश्लेषण करने पर से स्पष्ट होता है कि समुदाय में इस आयु समूह के बच्चों की शिक्षा और देखरेख के प्रति जिस जागरूकता एवं संवेदनशीलता की आवश्यकता है वह आँगनबाड़ी केन्द्रों के स्तर पर प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए सामुदायिक सहभागिता हेतु निम्न गतिविधियाँ की जा सकती हैं –

उड़ान उत्सव

प्राथमिक स्कूल/पूर्व माध्यमिक स्कूल तर्ज पर प्रवेश/सृजन उत्सव की तरह आँगनबाड़ी में प्रत्येक वर्ष उड़ान उत्सव का आयोजन सुनिश्चित किया जावे। कार्यकर्ता एवं सहायिका इस उत्सव को मानने के लिए जन समुदाय के बीच थीम कार्ड का प्रदर्शन करें एवं मस्तिष्क के विकास की प्रक्रिया से अवगत कराएँ।

गृह भेंट

कार्यकर्ता, सहायिका द्वारा गृह भेंट के समय पालकों को उनके बच्चों को आँगनबाड़ी भेजने के लिए प्रेरित किया जावें। मस्तिष्क विकास की प्रक्रिया को पूरे परिवार के बीच विस्तार पूर्वक बतावें। साथ ही पालकों को बच्चों की शिक्षा के संबंध में प्रेरित करें। बच्चों की विशेष योग्यता के क्षेत्रों को पहचान कर उसी दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा दें। बच्चों की समस्याओं को पहचान कर उन्हें दूर करने की योजनाएँ भी बनाएँ।

गर्भवती एवं धात्री माता की भेंट

गोदभराई के समय गर्भवती महिलाओं को उचित खान–पान एवं देखभाल के बारे में बताएँ। साथ ही गर्भावस्था के दौरान मानसिक स्थिति भी सही रखने के बारे में बताएँ। यह बताएँ कि उनकी हर गतिविधि का प्रभाव बच्चे पर पड़ता है। अतः सकारात्मक सोच रखने, खुश रहने, अच्छी आदतें अपनाने आदि से बच्चे पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

पालकों की बैठक

पालकों से हर महीने मिलकर बैठक करें। इन बैठकों में प्रत्येक बच्चे की उपलब्धियाँ एवं उनकी समस्याएँ बताएँ। साथ ही पालकों को अपने बच्चों के सही लालन–पालन से भी अवगत कराएँ। बच्चों को आगे बढ़ाने के समुचित विकास के लिए पालकों से ही योजनाएँ बनवाएँ।

टी. एच. आर. वितरण

पूरक पोषण आहार वितरित करते समय पालकों से मस्तिष्क विकास की प्रक्रिया एवं लालन–पालन और उनकी शिक्षा पर चर्चा अवश्य करें।

किशोरी बालिकाओं का प्रशिक्षण

किशोरी बालिकाओं को शरीर में होने वाले परिवर्तन, स्वयं की देखभाल विषय पर चर्चा करें। साथ ही अच्छे पालक बनने के तरीके भी बताएँ।

अन्नप्राशन

बच्चों के अन्नप्राशन के दौरान भी उचित लालन–पालन एवं मस्तिष्क विकास की प्रक्रिया के बारे में बताएँ।

बालभोज

बाल भोज कराते समय जन समुदाय से बच्चों के मस्तिष्क विकास की प्रक्रिया को बताएँ। साथ ही प्रेरक गतिविधियों से अवगत करावें एवं उचित लालन–पालन के लिए प्रेरित करें।

ग्राम पंचायत एवं ग्राम सभा

ग्राम पंचायत एवं ग्राम सभा में भी मस्तिष्क विकास की प्रक्रिया को बताएँ एवं गाँव के लोगों को जागरूक बनाएँ।

मितानिन एवं महिला स्व–सहायता समूह

मितानीन एवं एस.एच.जी. को बच्चे के विकास की प्रक्रिया से अवगत करावें एवं शैक्षिक प्रक्रिया को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए प्रेरित करें। गाँव में जागरूकता लाने के लिए प्रेरित करें।

उड़ान/थीम यात्रा

प्रतिमाह बच्चो के साथ मिलजुलकर कार्यकर्ता एवं सहायिका उड़ान/थीम यात्रा निकालें। थीम/उड़ान यात्रा के दौरान घर–घर जाकर थीमों, पाँचों विकासों एवं मस्तिष्क विकास की प्रक्रिया की जानकारी दें।

थीम यात्रा के उद्देश्य

- ✯ आँगनबाड़ी के प्रति शैक्षिक अवधारणा विकासित करना।
- ✯ जन संपर्क करना।
- ✯ कार्डों से शिक्षण का प्रचार–प्रसार करना।
- ✯ जन चेतना जागृत करना।
- ✯ प्रभावकारिता बढ़ाने के लिए।
- ✯ सामाजिक सामन्जस्य स्थापित करने के लिए।
- ✯ थीम कार्डों का प्रदर्शन समुदाय के समक्ष करने के लिए।
- ✯ आँगनबाड़ी में शिशुओं की शत्–प्रतिशत उपस्थिति के लिए।
- ✯ सहयोग राशि प्राप्त करने के लिए।
- ✯ मस्तिष्क विकास प्रक्रिया और 0 से 3 वर्ष प्रेरक गतिविधियों को जन–जन तक पहुँचाने के लिए।

थीम यात्रा हेतु नारे

- ✦ आँगनबाड़ी जाना है, अपनी समझ बढ़ाना है।
- ✦ शिशु हमारे प्यारे–प्यारे, मत रोको विकास के द्वारे।
- ✦ शिशु शिक्षा है एक खेल, जिसमें होगा अपना मेल।
- ✦ सूरज गोल चंदा गोल, आँगनबाड़ी है अनमोल।
- ✦ थीम वेब से पढ़ायेंगे, बच्चों को आगे बढ़ायेंगे।
- ✦ जन–जन से आई आवाज, आँगनबाड़ी जायेंगे आज।
- ✦ आँगनबाड़ी शिक्षा की नींव है, नींव ही तो भवन की जीव है।
- ✦ जिन हाथों में पालने की डोर, वही खींचे जीवन की डोर।
- ✦ कार्ड में केवल दू घंटा, पढ़ही लइका बजाही डंका।
- ✦ चलो चलें आँगनबाड़ी, शाला से पहले तैयारी।
- ✦ लइका ला आँगनबाड़ी भेज दे सियान, उहाँ पाही सुन्दर ज्ञान।

राजेश्वरी बघेल, लीना संजय कश्यप

बालगीत

शीर्षक – चहक

हम बच्चे फूल समान।।2।।

मम्मी पापा हरियाली दी, देती आँगनबाड़ी की दीदी मुस्कान।

हम बच्चे फूल समान।।2।।

(1) हर आँगन में चहक रहे हम, चहक रहे हर गलियाँ।

मधुर मिलन की बोली अपनी, खेलें सखी सहेलियाँ।।

झुमर–झुमर के नाचे हम सब, गाते मीठे गान।

हम बच्चे फूल समान।।2।। मम्मी पापा ....

(2) रंग बिरंगे कपड़े अपने, रंगीली अपनी दुनियाँ।

साथ–साथ हम खेलें कूदें, कहलाते मून्ना मुनियाँ।।

पढ़ने लिखने हम आँगनबाड़ी जाते, हमको है शान।

हम बच्चे फूल समान।।2।। मम्मी पापा ....

चमन लाल साहू